



मीभम-मुष्टमङ्गरुगवङ्ग-परभृगउ-भुलाभाय-
भवल्लपी०-मी-कास्त्री-काभकेरि-पी०
एगङ्गुरु-मङ्गरागाटभूमि-मीभ०मंभूतभा

मीभउ-मङ्गर-रुगवङ्ग-भरुभूतभावलि:

1. मीगुरवै नमः
2. मुष्टरुगवाय नमः
3. म्वमे नमः
4. मात्राय नमः
5. रयानिणवे नमः
6. रत्राय नमः
7. डिडिर्वै नमः
8. रत्राय नमः
9. तृभुक्तल्ले नमः
10. मभाकिताय नमः
11. रदलाय नमः
12. यउमिडाय नमः

13. मृदूणनाथ नमः
14. गिरजनाथ नमः
15. गणपल्लव नमः
16. गङ्गाधरनाथ नमः
17. गरुडवृक्षैविन्द्य नमः
18. गङ्गाधर नमः
19. मूर्तिभैलिभूषण नमः
20. मित्राधर नमः
21. मुद्राधरनाथ नमः
22. वसिष्ठ नमः
23. विष्णुधरनाथ नमः
24. भाषाधर नमः
25. मन्त्रधरनाथ नमः
26. भल्लकृष्ण नमः
27. भीषण नमः
28. भृङ्गाधरनाथ नमः
29. भद्रेश्वर नमः
30. भद्राधरनाथ नमः
31. भद्राधरनाथ नमः
32. रुद्राधर नमः
33. रुद्राधर नमः
34. रुद्राधर नमः
35. भृङ्गाधर नमः

36. मन्त्राय नमः
37. रैमात्राय नमः
38. रैश्वराय नमः
39. भक्तिसाय नमः
40. धृष्टिगुणाय नमः
41. धृष्टाय नमः
42. धृष्टाय नमः
43. धृष्टाय नमः
44. धृष्टाय नमः
45. धृष्टाय नमः
46. धृष्टाय नमः
47. धृष्टाय नमः
48. धृष्टाय नमः
49. धृष्टाय नमः
50. धृष्टाय नमः
51. धृष्टाय नमः
52. धृष्टाय नमः
53. धृष्टाय नमः
54. धृष्टाय नमः
55. धृष्टाय नमः
56. धृष्टाय नमः
57. धृष्टाय नमः
58. धृष्टाय नमः

59. सुम्बरकैकुभृतिभते नमः
60. मृपिलाय नमः
61. मृपिलःभृताय नमः
62. रुडाङ्गने नमः
63. रुडकुते नमः
64. विरुवे नमः
65. मुल्लकुते नमः
66. मभरीष्टेगिने नमः
67. कलिखीउभृगङ्गिताय नमः
68. गुलाःमिने नमः
69. गुलागेकिने नमः
70. विष्णुद्वनिःमकुते नमः
71. गुह्राय नमः
72. गुलामयाय नमः
73. गुह्राय नमः
74. रुगिःयाय नमः
75. रुडिकुते नमः
76. वृणाय नमः
77. रुरुङ्गुय नमः
78. रुडिरुते नमः
79. रुरुःने नमः
80. रुडेमाय नमः
81. रुडरावनाय नमः

82. रुद्राय नमः
83. रुद्राय नमः
84. रुद्राय नमः
85. रुद्राय नमः
86. पिनाकरुद्राय नमः
87. भङ्गलाङ्गने नमः
88. भङ्गलाङ्गने नमः
89. भङ्गलाङ्गने नमः
90. भङ्गलाङ्गने नमः
91. भङ्गलाङ्गने नमः
92. भङ्गलाङ्गने नमः
93. भङ्गलाङ्गने नमः
94. भङ्गलाङ्गने नमः
95. भङ्गलाङ्गने नमः
96. भङ्गलाङ्गने नमः
97. भङ्गलाङ्गने नमः
98. भङ्गलाङ्गने नमः
99. भङ्गलाङ्गने नमः
100. भङ्गलाङ्गने नमः
101. भङ्गलाङ्गने नमः
102. भङ्गलाङ्गने नमः
103. भङ्गलाङ्गने नमः
104. भङ्गलाङ्गने नमः

105. मिवाय नमः
106. पराङ्गणाय नमः
107. इयभिमङ्कैरिद्विभुभवुताय नमः
108. उष्टरणिषे नमः
109. भट्टरुपाय नमः
110. कालपीरननाय नमः
111. मन्त्रयाय नमः
112. विष्टुपउये नमः
113. वएवै नमः
114. वेष्टुय नमः
115. गिन्नायाय नमः
116. एल्लिकापियाय नमः
117. मीभाङ्गिउगाङ्गुयाय नमः
118. म्बेणिषे नमः
119. मिउरिमिकाय नमः
120. मीभापाय नमः
121. मीणराय नमः
122. मुधिल्ल नमः
123. माभिउ नमः
124. मुणये नमः
125. उल्ललाय नमः
126. भाणवै नमः
127. मुयमे नमः

128. मंविघंमवै नमः
129. मरिण्डपुत्रविगुणाय नमः
130. गुरुगुरुवृणलब्रपुमभृमभभुतवे नमः
131. मनुभ्राय नमः
132. मंघमिने नमः
133. पैधिल्ल नमः
134. मंभारगुगउद्गुणाय नमः
135. मृत्तिपुत्रे नमः
136. मुद्रुगेविनुय नमः
137. पुम्भिगुय नमः
138. पुपुमङ्गुरवै नमः
139. मुभेम्भिने नमः
140. निगभात्रुल्लय नमः
141. एकाननूरभाङ्गकाय नमः
142. मीरुमउवृणुत्रे नमः
143. एकल्लय नमः
144. कथायरुत्रे नमः
145. रुकुपुपुममृष्टाय नमः
146. गेविनुगवद्भिषाय नमः
147. रुमिभरुद्धणारिल्ल नमः
148. मृष्टुगेरुपणभृष्टय नमः
149. भाउङ्गमीभल्लेवीवेकिभूपिउमन्नुताय नमः
150. वडिडीरुम्भिपुट्टुमभृष्टयपुवगुकाय नमः

- 8

174. गुरुदुभाय नमः
175. गुरुगण्डय नमः
176. गुल्लिने नमः
177. गेप्रे नमः
178. गेपनाय नमः
179. नराकृतये नमः
180. निम्नभाय नमः
181. नराकाराकृतये नमः
182. नभृय नमः
183. नाषाय नमः
184. निरङ्गनाय नमः
185. निम्नूनाय नमः
186. निष्कलाय नमः
187. निष्टाय नमः
188. नाभरुपविदेकवडे नमः
189. नालीकाय नमः
190. निष्पृयाय नमः
191. नीरुणे नमः
192. निरामिधे नमः
193. निरामयाय नमः
194. नित्रुतये नमः
195. निःश्वराकाराय नमः
196. निःश्वराकृतये नमः

197. निरीश्वराय नमः
198. नीरुपकाय नमः
199. निजुल्लाय नमः
200. निष्कमल नमः
201. निवृषाय नमः
202. वसिने नमः
203. निर्वेपाय नमः
204. निटुपुष्टाय नमः
205. रुष्टाय नमः
206. दुष्टनाम्नाय नमः
207. भावद्वारिल नमः
208. भविष्याय नमः
209. भुरगै नमः
210. भावङ्गलाय नमः
211. वभिने नमः
212. भउे नमः
213. भाङ्गउे नमः
214. भाङ्गिकाय नमः
215. भट्टाय नमः
216. भवभिष्टाय नमः
217. भृगुकाय नमः
218. भमिष्टाय नमः
219. भङ्गिले नमः

220. ष्टुषमे नमः
221. गलिने नमः
222. वाग्निने नमः
223. भित्तिक्लिक्लिने नमः
224. वाग्निभय नमः
225. वरिष्ठाय नमः
226. वृष्टावृष्टावृष्टाय नमः
227. परमाय नमः
228. परिशुने नमः
229. प्रेम्णाय नमः
230. प्रह्लाद नमः
231. प्रीत्याय नमः
232. प्रियंवदाय नमः
233. प्रउत्तिने नमः
234. प्ररुषेगिने नमः
235. प्रह्लाद नमः
236. प्रमृतिरुपमाय नमः
237. पारङ्गताय नमः
238. पामभृताय नमः
239. परविन्दे नमः
240. प्रुत्तीक्ष्णाय नमः
241. मृष्टिभृताय नमः
242. मृष्टाय नमः

243. ऀकवल्डिने नभः
244. सुषाभरुय नभः
245. भृरुवे नभः
246. भृरुणे नभः
247. विरुणे नभः
248. भेतिने नभः
249. भृपूकामाय नभः
250. भृयभृरुवे नभः
251. भरुते नभः
252. सरुपाय नभः
253. सरुक्रुय नभः
254. परमैरुतिषे नभः
255. परमैपराय नभः
256. परमैराय नभः
257. परमैकाष्ठयै नभः
258. परमैमरु नभः
259. परमैगुरु नभः
260. परमैठकमे नभः
261. परमैवभुने नभः
262. परमैरुद्रु नभः
263. परमैपुरे नभः
264. परायल्लय नभः
265. परमैरावय नभः

266. पुमाकुङ्क्षणे नमः
267. पुमाङ्काय नमः
268. पुल्लनभनभृष्टे नमः
269. पुमाभृ नमः
270. पुट्टगङ्गवते नमः
271. विष्णु नमः
272. विष्णुते नमः
273. वैष्णवे नमः
274. वैष्णवेष्टुवैष्णवे नमः
275. मट्टवृष्टाय नमः
276. मट्टपराय नमः
277. त्रिमट्टाय नमः
278. मट्टनायकाय नमः
279. मट्टपुष्टिष्टाय नमः
280. मट्टमिष्टे नमः
281. मट्टगुप्ताय नमः
282. मभाय नमः
283. रैक्षिष्टे नमः
284. मस्त्रिष्टनृष्टुपाय नमः
285. मष्टमष्टुपाय नमः
286. मट्टुपाय नमः
287. मट्टमंष्टुपाय नमः
288. नगैष्टाय नमः

289. ऋड्भानिडाय नमः
290. नगरादिनुडाय नमः
291. नभाय नमः
292. नारीनरनवाकुडये नमः
293. वृभल्लैभिनिराश्रामिने नमः
294. मारणविण्यिने नमः
295. मभिने नमः
296. भुरेश्वराणादन्डुभ्राम्भाय नमः
297. भुरिकेभरिल नमः
298. मङ्किडामिवाटुकुट्टरवैदिकवगुडै नमः
299. कुकुलानलकुण्डकुभारिलकुडानडये नमः
300. कुडककमकुण्डुलिमाय नमः
301. कविकेभरिल नमः
302. कुवामिभन्मडुरुपझाभृय नमः
303. कलिनमनाय नमः
304. बैगरीगरुनाय नमः
305. भाहृमहृवडे नमः
306. मभिउट्टुडये नमः
307. एउल्लैनपुडिहृमुभुनेस्त्राएनाभनवे नमः
308. वैमधिकविमधेकिविमधल्लविण्णल्लय नमः
309. निरभुद्धैडिभुत्तुमैवरुगवडागभाय नमः
310. कास्तीनगरनिम्नश्राण्मेननुपात्तिडाय नमः
311. वरणलयनिम्नडै नमः

312. एकभृताषपटैस्त्राय नमः
313. गुरुभृमिङ्कलाणाभृतापङ्कनाय नमः
314. कालापङ्कनाय नमः
315. कामकैष्ठणस्त्रीनाय नमः
316. कामकैटिपट्मयाय नमः
317. कामाक्षीवसिबभृक्तुते नमः
318. कालरुभीस्रराक्षसाय नमः
319. कृष्णभैषाणभृतापमैषाणलसिरःपट्मनाय नमः
320. ऋषिनाय नमः
321. ऋषिभृद्धवत्समे नमः
322. ऋषिरक्षित् नमः
323. ऋषिपङ्कनाय नमः
324. ऋषिपङ्कनाय नमः
325. ऋषिगङ्गाय नमः
326. ऋषिगङ्गाय नमः
327. ऋषिगङ्गाय नमः
328. ऋषिगङ्गाय नमः
329. ऋषिगङ्गाय नमः
330. ऋषिगङ्गाय नमः
331. ऋषिगङ्गाय नमः
332. ऋषिगङ्गाय नमः
333. ऋषिगङ्गाय नमः
334. ऋषिगङ्गाय नमः

335. पीङ्गमित्रे नमः
336. ऐःभृङ्गाय नमः
337. णरिष्टुभनाय नमः
338. ण्वित्रे नमः
339. ण्विउमेषणीदेवाय नमः
340. विभृउद्वैउवैरवाय नमः
341. ळ्ङ्गाएनकुभङ्गाउकुङ्कुङ्गाउमङ्गलाय नमः
342. कैलाभमेवित्रे नमः
343. गङ्गीनगायपङ्गम्याय नमः
344. काभरुपात्तनाय नमः
345. मकाभाय नमः
346. काम्पीरेश्वरमेवकाय नमः
347. मवत्रीश्वरकाचेष्टाभायाकास्त्रीभलीप्रियाय नमः
348. कालीभङ्गरिश्वरएभृदेवीप्रयागगाय नमः
349. मीमैलेमएगत्राघपुरुषेडुभलीभगाय नमः
350. रुभ्रुकैल्यिनीविनृवाभिनीमेवनापराय नमः
351. मेरुकनृकुभारीगाय नमः
352. एनानूनएनान्तिप्रै नमः
353. मननुप्रवैवाभ्वधागलपङ्गम्याय नमः
354. कालीकलराय नमः
355. कलृाय नमः
356. भगःमराग्रीगगाय नमः
357. कुङ्कुकलाएपाभृङ्गाउमैलभलीगगाय नमः

358. मीनीपडित्वतृणैः ऋषाभैः उवनाम्नाय नमः
359. भातृमीरङ्गभण्डनमायिप्रणाम्नाय नमः
360. मीपलाङ्गेश्वरीरङ्गताण्डुलमुषतृणैः नमः
361. काङ्क्षीगुणमूढतृणतृणपरिभृताय नमः
362. रुभृष्टैः निलाकामलिङ्गमेवाण्डाण्डाय नमः
363. भट्टवृत्तभूलभूयिते नमः
364. काभकैः निभण्डाय नमः
365. गिरभृगभण्डतृणभैः लिङ्गय नमः
366. मलिङ्गकाय नमः
367. तृमृङ्गमभृष्टैः गलिङ्गय नमः
368. तृभृष्टैः नमः
369. मारण्डभण्डतृणमाय नमः
370. भवण्डय नमः
371. भवण्डय नमः
372. मारण्डभण्डतृणमाय नमः
373. मारण्डभण्डतृणमाय नमः
374. मारण्डभण्डतृणमाय नमः
375. काभकैः निभण्डाय नमः
376. कालभण्डय नमः
377. काभण्डय नमः
378. काभण्डय नमः
379. मारण्डभण्डतृणमाय नमः
380. काभकैः निभण्डाय नमः

381. कम्पित्कुलमोपराय नमः
382. मिधुमङ्गपरल्लनवत्तडीरुप्पय नमः
383. भोभायभलाभायमेतुकेरलण्डकुते नमः
384. पट्टुतीरुपभापमिधुगभविवेणनाय नमः
385. मुनत्तेन्दुहिणपुवभरभृष्टकृयागभाय नमः
386. मुनन्मभयएनत्तिवाङ्गयापुत्तवाङ्गय नमः
387. वैगेश्वराक्षानिरुताय नमः
388. वैगुय नमः
389. वैगविष्टं वराय नमः
390. भुम्भिरुताय नमः
391. भुम्भिराय नमः
392. भिरुय नमः
393. भूभवे नमः
394. भूमे नमः
395. भ्रित्तिपुष्टाय नमः
396. भट्टवत्तपट्टपुष्टीरुवाय नमः
397. ममरीरवते नमः
398. म्भुरापरमंभारपरतरुत्तुगवे नमः
399. कृष्टरिवज्जमंमारुष्टात्तुलकुष्टवैरुवाय नमः
400. मन्तुगय नमः
401. मन्तुलिताय नमः
402. मन्तुय नमः
403. मापुष्टमनाय नमः

404. धनुमनीपारम्वने नमः
405. धनुषाडीउमानमाय नमः
406. मृदेषाय नमः
407. मृत्तयाय नमः
408. मृत्नाय नमः
409. मृत्तुय नमः
410. मृपुनरुवाय नमः
411. मुमूय नमः
412. मृमूय नमः
413. पृमृमृने नमः
414. मिमूय नमः
415. पेमूय नमः
416. मभूमूय नमः
417. मभिमूय नमः
418. पृतिरविमूय नमः
419. भारल्लय नमः
420. मवमभुविने नमः
421. मृणभ्रामृवामे नमः
422. मृकुभउये नमः
423. भेरुउभेरवये नमः
424. भरायममे नमः
425. भरामीलाय नमः
426. भलेणमे नमः

427. भलाभनये नमः
428. भरुनीयाय नमः
429. भलामङ्गाय नमः
430. भाननाय नमः
431. भलाङ्गुविदे नमः
432. भायाउङ्गुविदे नमः
433. मृगुगाय नमः
434. भलीभङ्गुलपङ्गुगाय नमः
435. भाङ्गुगाभाङ्गुकङ्गुमङ्गुङ्गुलङ्गुगाय नमः
436. यथापङ्गुगाभाङ्गुलङ्गुगाभाङ्गुपङ्गुगाय नमः
437. रवीङ्गुगाय नमः
438. रीङ्गुगाय नमः
439. रमङ्गुगाय नमः
440. रमिङ्गुगाय नमः
441. रगङ्गुगाय नमः
442. भरुङ्गुगाय नमः
443. रङ्गुगाय नमः
444. मृङ्गुगाय नमः
445. निरङ्गुगाय नमः
446. भाङ्गुगाय नमः
447. काभङ्गुगाय नमः
448. काङ्गुगाय नमः
449. भाङ्गुगाय नमः

450. भण्णणीमभानिउय नमः
451. ण्णैतिःपुण्णमविउय नमः
452. पाण्णैयपुण्णभित्तये नमः
453. विण्णुपाण्णभुलामेविने नमः
454. विण्णयापुण्णीण्णाय नमः
455. विण्णिमाण्णमविण्णुय नमः
456. विण्णनापण्णपिण्णाय नमः
457. पाण्णीपुण्णभुलामेविने नमः
458. विण्णुपाण्णभुलामेविने नमः
459. गण्णवण्णभुलामेविने नमः
460. रुण्णलण्णविण्णुय नमः
461. वण्णवण्णभुलामेविने नमः
462. वण्णभुलामेविने नमः
463. उण्णवण्णभुलामेविने नमः
464. भण्णिण्णभुलामेविने नमः
465. मीण्णवण्णभुलामेविने नमः
466. मण्णैविलण्णवण्णभुलामेविने नमः
467. कण्णवण्णभुलामेविने नमः
468. कण्णवण्णभुलामेविने नमः
469. कण्णवण्णभुलामेविने नमः
470. कण्णवण्णभुलामेविने नमः
471. कण्णवण्णभुलामेविने नमः
472. कण्णवण्णभुलामेविने नमः

473. परमेष्ठिते नमः
474. वसुधैव कुटुम्बकम् नमः
475. कामाक्षीमठनेन्दुकाय नमः
476. पूज्यपाद नमः
477. पूज्यविते नमः
478. पूज्यपाद नमः
479. भवतु भवतु भवतु नमः
480. भवतु भवतु नमः
481. नमो भगवते नमः
482. पूज्यपाद नमः
483. सुभक्तप्रिय नमः
484. सुभक्तप्रिय नमः
485. सुभक्तप्रिय नमः
486. सुभक्तप्रिय नमः
487. सुभक्तप्रिय नमः
488. सुभक्तप्रिय नमः
489. सुभक्तप्रिय नमः
490. सुभक्तप्रिय नमः
491. सुभक्तप्रिय नमः
492. सुभक्तप्रिय नमः
493. सुभक्तप्रिय नमः
494. सुभक्तप्रिय नमः
495. सुभक्तप्रिय नमः

496. कम्पटुण्ये नमः
497. कम्पल्लय नमः
498. कृतिने नमः
499. कलृल्लगुल्लमील्लाय नमः
500. क्रियाभृताय नमः
501. कृपाभताय नमः
502. कीर्तिभटे नमः
503. कृतवैगमप्रसृष्टसङ्गल्लताय नमः
504. एभिल्लप्रसङ्गसृमील्लाल्लतनल्लपात्तिताय नमः
505. वेणुवृक्षभृताय नमः
506. ल्लनण्डूय नमः
507. तिम्वट्ठवारिण्ये नमः
508. त्रैपालल्लेमकुपालल्लवृधल्लेपल्लेमकुटे नमः
509. कैलामकुल्लमङ्गुपुपमुपट्टतनल्लविण्ये नमः
510. भोगउत्तनिष्कामपएवै नमः
511. वैरागृठेणकाय नमः
512. भुणीमल्लये नमः
513. ल्लिवृल्लमिने नमः
514. ल्लिवल्लैवृरुटे नमः
515. मरुभाय नमः
516. प्पमवृकभल्लाल्लड्डुल्लरिड्डुल्लल्लनीतिण्ये नमः
517. मभूल्लकुम्भपापृभल्लभल्लभिड्डाङ्गुताय नमः
518. पिन्नुल्लपरिण्डात्तेवामिपुल्लवमंसयाय नमः

542. भृयंविनभृवृत्तगुमापादिउल्लामनाय नमः
 543. वदुमृलारुकेनुकुनीरभारप्रभपृगाय नमः
 544. मभृल्लमृवद्वलादुवीषीवनमृयाय नमः
 545. मराभृगनिवृद्धमरागीयमृडिभृगाय नमः
 546. मराभृकुलपवनाय नमः
 547. वभिष्टाय नमः
 548. वगृष्टाय नमः
 549. वराय नमः
 550. मभीरुवद्वभृष्टाय नमः
 551. पंभृनुपषात्राय नमः
 552. दुभारमीकरभृल्लिष्टपिष्टादनक्रियाय नमः
 553. भकरनुपरीभानृभपूरेकुचे नमः
 554. भराकवये नमः
 555. कभृल्लमृरकेरीकुउकल्लेलिनीपराय नमः
 556. मभृल्लमृक्रिजंमुकात्रुनीरपराभिउये नमः
 557. वेलाणभृद्वभृद्वये नमः
 558. भृउमल्लीवनेद्वय नमः
 559. भरावृणिपूमनाय नमः
 560. मराभृाय नमः
 561. भृगवमृकुडे नमः
 562. एरुकुल्लामृभृधिल्ल नमः
 563. लतापृपृकुताचनय नमः
 564. भौवभृककेष्टुनय नमः

565. भौपभृष्टिककैमिकाय नमः
 566. भौप्राष्टिककाकैलाय नमः
 567. भौपाभनिकपत्रगाय नमः
 568. भौपगायनकुम्भिकाय नमः
 569. भौवाडिष्टुकपुष्पलिके नमः
 570. भौवागडिकमातुलाय नमः
 571. भौपेन्द्रष्टिकवृष्टिकाय नमः
 572. भौभ्राष्टिकपुम्बवत्काय नमः
 573. भौवहृष्टनिकाभृष्टाय नमः
 574. भौवीष्टिकवाडुलाय नमः
 575. भौवनाडुपिकम्भाय नमः
 576. भौवामिष्टिकपञ्चाभृष्टाय नमः
 577. भौवत्रुमिकवाडुमाय नमः
 578. भौविनामिकभड्डुष्टाय नमः
 579. भौवपृष्टिकउकुम्भिकाय नमः
 580. भौपृष्टिककात्रुगाय नमः
 581. भौमाकुनिकभौकलाय नमः
 582. भौवापीष्टिकवेमत्रुगाय नमः
 583. भौष्ट्रिकल्लैगुल्यै नमः
 584. भौविलिष्टिकरुष्टुल्यै नमः
 585. भौवभृष्टपष्ट्रुगाय नमः
 586. भौष्ट्रिष्टिकरुष्टुकाय नमः
 587. भौवणीष्टिकगाडुकाय नमः

588. भैभंविष्टिकगैपुष्ठाय नमः
589. भैवृक्षीटिककैकिलाय नमः
590. भैपपुष्टिकवृष्टि नमः
591. भैवृष्टिकवृष्टिकराय नमः
592. भैवृष्टिकवृष्टिकराय नमः
593. भैवृष्टिकवृष्टिकराय नमः
594. वृष्टिक नमः
595. वृष्टिक नमः
596. वृष्टिक नमः
597. वृष्टिक नमः
598. वृष्टिक नमः
599. वृष्टिक नमः
600. वृष्टिक नमः
601. वृष्टिक नमः
602. वृष्टिक नमः
603. वृष्टिक नमः
604. वृष्टिक नमः
605. वृष्टिक नमः
606. वृष्टिक नमः
607. वृष्टिक नमः
608. वृष्टिक नमः
609. वृष्टिक नमः
610. वृष्टिक नमः

634. गैभडीडीरुमेवनाय नमः
 635. धुरुपवृद्धपाटाट पद्मपाटनिर्मितुते नमः
 636. मुम्भिल्ल नमः
 637. उडुभभृमिभलावाकृरुपवते नमः
 638. ऐडिडुङ्कगाय नमः
 639. ऐडिधुडीपींनिर्मितुते नमः
 640. गट्टमभंभुनाय नमः
 641. मलकननुवगारुनाय नमः
 642. मुषवल्ङ्गिरेवेदिने नमः
 643. मीपुल्लगिरिमेवकाय नमः
 644. गैवत्तनभनीनायाय नमः
 645. गिरिवेगपएम्माय नमः
 646. पुरुधेडुभमङ्कडिल्ल नमः
 647. विभलापीङ्कल्लकाय नमः
 648. मडाननुय नमः
 649. मडैएमे नमः
 650. एमेन्नुयविनिगुलाय नमः
 651. मीडुन्नुलिउट्टेममीट्टमुङ्गगिरिम्बिल्ल नमः
 652. मारट्टवट्टनाट्टाउट्टाट्टापींणिरेकल्माय नमः
 653. रामट्टनुपुगड्डिल्ल नमः
 654. उङ्गरुट्टाएम्बिल्ल नमः
 655. वराकट्टेवडुभारमारट्टा कृयमक्तिरुते नमः
 656. रुगिवागिल्ल नमः

657. कृष्णयन्त्रैर्मित्रे नमः
 658. मीरारतीपद्मय नमः
 659. विरुङ्गकाणिष्ठानभुमलकानिकरैर्मामै नमः
 660. विरुपाक्षभक्तैवभरुनीयपद्मम्बाय नमः
 661. भनीधिभङ्गलीभानृभैलाभायभक्तगुरवे नमः
 662. प्रामृप्रीमृवाष्टैर्मृभायाम्भिमिकाय नमः
 663. प्रामृभायभुविनृभुभुभलकभंभुताय नमः
 664. प्रीमृभायभक्तैर्मनान्निभनन्नाय नमः
 665. श्रवामृभायनिबिधुपृष्ठीणनताम्बिकाय नमः
 666. उमीमृभायननूतनगिहृदिवन्निताय नमः
 667. कामकैलीपीठपुत्रे नमः
 668. कभ्रवैगवतीमराय नमः
 669. एकभन्ताषमरम्भरैरुभप्रवृताय नमः
 670. कामाक्षीमरम्भनृपाद्मकाक्षनउद्गराय नमः
 671. एवैरम्भने नमः
 672. परब्रह्मवृषभूपनणीरणिचे नमः
 673. भट्टवृमभापृउकास्तुरितविगृहाय नमः
 674. भवहृपीठपृरैरुल्लुभुभावहृमंमयाय नमः
 675. भुरैश्वराम्भिमृष्टमभारणितपाद्मकाय नमः
 676. भीमंभास्त्रयपारीरम्भय नमः
 677. कामरम्भपद्मप्रविष्टे नमः
 678. श्रद्धिमद्वयःकलिउद्भिःप्रद्विष्टुत्ताय नमः
 679. सुमेतुकिभमैलानृणभूपनमिकाय नमः

680. विष्टुवमीकुडमेधमविश्वस्तुनामिडा य नमः
 681. एगस्तुवे नमः
 682. एगमैनये नमः
 683. माभूयेनये नमः
 684. मभवयिने नमः
 685. मृष्टमृष्टमृष्टलिङ्गिने नमः
 686. भास्तुवेगविभक्तुते नमः
 687. वैयाकरणीमेणिने नमः
 688. वभिष्टुय नमः
 689. ककुगभृगय नमः
 690. गेउभीयवमेभुम्लि नमः
 691. वैमेधिकमष्टपराय नमः
 692. मेष्टेनिमदिष्टमिने नमः
 693. ऐभिनीयकुष्टिष्टुते नमः
 694. मिगभृगययुष्टाय नमः
 695. श्रुष्टुपामुपउत्क्रियाय नमः
 696. सुष्टुष्टुवाष्टिष्टुते नमः
 697. श्रिष्टुष्टुगवष्टुगभाय नमः
 698. विनेष्टिनिष्टिउष्टुष्टुयगभीरुष्टुष्टुते नमः
 699. वृष्टुष्टुउष्टुवष्टुगिडा य नमः
 700. विश्वमृष्टिविमारष्टाय नमः
 701. मिष्टिमीभाविष्टुगल्लय नमः
 702. प्लष्टुष्टुप्लष्टुमकाय नमः

703. मंभारउड्मभृवडे नभः
 704. भाषाउड्मभृवडे नभः
 705. मभलाविष्टकापृरेपेन्मलनविमभृवडे नभः
 706. मंभारउरलेपायमन्मनपदिष्टकापे नभः
 707. रभिकाकलादणनकभलावाकृमभृवडे नभः
 708. प्रनिपुणनभरुमउल्लेकीभलाकवये नभः
 709. रूढमभृवडेमिपागीउपभृनराधृवडे नभः
 710. पृष्टमृष्टेणप्रमिने नभः
 711. भेलाप्रमकाय नभः
 712. निरुगुउभायमिरेनिगमीलनाय नभः
 713. वेलावुवनरुट्वाय नभः
 714. उड्मभृवडेनभः
 715. उड्मभृवडे नभः
 716. उड्मभृवडेनभः
 717. उरपडिमभृवडे नभः
 718. उरकभृवडेनभः
 719. उपमिने नभः
 720. उपमावृगाय नभः
 721. उपवृविनिमृगाय नभः
 722. नलिनेकिनिगमभृवडे नभः
 723. मलष्टुडिने नभः
 724. मडिभातृमिने नभः

748. भर्त्रिन् नमः
 749. भर्त्रेधर्तैर्गभिर्न नमः
 750. परलम्भपरिवृष्टे नमः
 751. मीभिस्त्रापृष्टद्वन्द्वे नमः
 752. भाद्रुकैकभक्तवाक्त्राय नमः
 753. वैश्वेन्द्राय नमः
 754. शङ्कराय नमः
 755. निष्कलाभायनिगुणाय नमः
 756. मातृष्टायत्रिष्टाय नमः
 757. गिरि नमः
 758. सुनन्दीपिण्डविष्टाय नमः
 759. श्वान्दुष्टिपदमष्टाय नमः
 760. मूढमैत्रुष्टिनिष्ठाय नमः
 761. मस्तिष्कमभामष्टाय नमः
 762. नरुष्टाय नमः
 763. नरुष्टाय नमः
 764. नरुष्टाय नमः
 765. गिरिष्टायत्रिष्टाय नमः
 766. पृथ्वीपृथ्वीष्टाय नमः
 767. नमिष्टाय नमः
 768. ननुष्टायपृष्टाय नमः
 769. रुष्टाय नमः
 770. रुष्टायननुष्टाय नमः

771. कुण्डभाय नमः
772. मन्त्राय नमः
773. उद्भाय नमः
774. पराङ्मुगच्छिनाय नमः
775. मकलाङ्गने नमः
776. मकलाय नमः
777. पुरवे नमः
778. पुरुषाय नमः
779. पुष्पलाय नमः
780. पुष्पाय नमः
781. मङ्गभाङ्गाय नमः
782. पुराउनाय नमः
783. वैगवैगिने नमः
784. वैगवैगिने नमः
785. सुवनाङ्गने नमः
786. वनेन्द्राय नमः
787. सुडिकुडे नमः
788. सुडिमाय नमः
789. सुडाय नमः
790. सुदिमाय नमः
791. सुउरावकाय नमः
792. मङ्कुरडे नमः
793. मङ्गराजामभूमायप्रवृत्ताय नमः

- 36

817. नम्रीनम्भरभीङ्गु भ्नावपाविउविगुलाय नमः
818. पविङ्गुउवाउपाविङ्गुटुपुमेधल्लपएम्पिउाय नमः
819. उद्धम्पुङ्गुपुकरनाय नमः
820. इभम्पुङ्गुविवेककुडे नमः
821. निट्टुननुय नमः
822. निगलभाय नमः
823. निरलाय नमः
824. निपिलेळकाय नमः
825. निट्टुणिये नमः
826. निट्टुमङ्गुल्लाय नमः
827. निणिभूय नमः
828. निरविट्टुकाय नमः
829. निट्टुवाभिने नमः
830. निट्टुमुण्णये नमः
831. निनुङ्गाय नमः
832. निगभारिण्णे नमः
833. निरङ्गुनाय नमः
834. निट्टुपुण्ड्राय नमः
835. निट्टुभुङ्गाय नमः
836. निरीश्वराय नमः
837. निधुङ्गे नमः
838. निधुउये नमः
839. निःश्वाय नमः

840. निष्काय नमः
841. निपिलवामरुवे नमः
842. पुरीमाय नमः
843. पुत्रगाय नमः
844. पुष्टाय नमः
845. पुत्रनाभिते नमः
846. पुरुषियाय नमः
847. विष्टुत्वीटाय नमः
848. विष्टुमाय नमः
849. मीविष्टुधेरुमीगुरवे नमः
850. लङ्कै नमः
851. लङ्काय नमः
852. लङ्काय नमः
853. लङ्काय नमः
854. लङ्काय नमः
855. लीमते नमः
856. लङ्गाय नमः
857. लङ्गाय नमः
858. लङ्गाय नमः
859. लङ्गाय नमः
860. लङ्गाय नमः
861. लङ्गाय नमः
862. लङ्गाय नमः

863. कामकुमलाय नमः
864. कानिवस्त्रिण्डे नमः
865. मष्टाय नमः
866. मरुपत्रये नमः
867. धामित्रे नमः
868. मभुत्रये नमः
869. मभुवापलाय नमः
870. स्त्रीवेरमीउलध्वत्राय नमः
871. स्त्रीभडीकारिउङ्गुलाय नमः
872. ललितमेषभत्राय नमः
873. ललकैष्टुत्रायकाय नमः
874. ललितङ्गाय नमः
875. लयल्लुत्रे नमः
876. लल्लुध्वाय नमः
877. लल्लुल्लुत्राय नमः
878. कभुकल्लुत्राय नमः
879. कलिप्रभित्रे नमः
880. कल्लुल्लुत्रे नमः
881. कलप्रत्रये नमः
882. रुधितत्रुवालिङ्गाय नमः
883. रुगाय नमः
884. रुभुरमेवित्राय नमः
885. वागविन्दे नमः

886. वैगविट्टे नमः
887. वृक्षाय नमः
888. वमैष्टाय नमः
889. वमपिष्टाय नमः
890. उद्धरवृत्तुतिवृत्ताय नमः
891. नमिडागतिभङ्गलाय नमः
892. नागमैलमिरञ्जितिले नमः
893. राभगिट्टमृभामृष्टाय नमः
894. वाङ्मिडागुप्टाय नमः
895. मन्त्राय नमः
896. मन्त्रीनाय नमः
897. भेदभेदगाय नमः
898. यतिगट्टविबैकल्लय नमः
899. यतिगिष्टे नमः
900. यतिगुवनाय नमः
901. उद्धरिले नमः
902. विडुगुष्टैडुमृतिगुष्टाय नमः
903. कृपानिष्टे नमः
904. यत्रे नमः
905. यतिभनमे नमः
906. यमृष्टाय नमः
907. यल्लङ्गाय नमः
908. यल्लङ्गुप्लव्यय नमः

909. यल्लय नमः
910. यल्लपउयै नमः
911. यल्लनै नमः
912. यल्लरुवै नमः
913. यल्लरावनाय नमः
914. कृपादिउकगलभूय नमः
915. विप्रभुविण्णै नमः
916. मल्लभुवै नमः
917. निपिलक्कुउलाणाट्टय नमः
918. पाधल्लभउपल्लनाय नमः
919. प्तिष्ठापकभुत्तनाय नमः
920. भउद्धयभल्लनयाय नमः
921. परिक्खण्णकण्णवैट्ठि नमः
922. मन्तुण्णै नमः
923. मन्तुण्णनाय नमः
924. भुत्ताय नमः
925. भुत्तुय नमः
926. भट्टभूय नमः
927. भट्टराय नमः
928. भनैभयाय नमः
929. मात्ताय नमः
930. मुरुक्कराय नमः
931. मुक्काय नमः

932. सुगय नमः
933. मेकविवल्लिताय नमः
934. त्रिवे नमः
935. उरवे नमः
936. बभित्ते नमः
937. मरुते नमः
938. भारुतात्ताय नमः
939. गरुतात्ताय नमः
940. गरुताय नमः
941. गरुताय नमः
942. गरुताय नमः
943. गरुताय नमः
944. गरुताय नमः
945. गरुताय नमः
946. गरुताय नमः
947. गरुताय नमः
948. गरुताय नमः
949. गरुताय नमः
950. गरुताय नमः
951. गरुताय नमः
952. गरुताय नमः
953. गरुताय नमः
954. गरुताय नमः

955. गरुमीश्वर्य नमः
956. गरुपिषाच नमः
957. नानुःपुल्लय नमः
958. नपुल्लय नमः
959. नगन्निःपुल्लय नमः
960. नपुल्लय नमः
961. पुल्लनभनय नमः
962. विल्लनङ्गने नमः
963. विलामकुटे नमः
964. पिषापिषभुज्जलीनय नमः
965. मभुताच नमः
966. मुकामरुवते नमः
967. मरुभये नमः
968. मणलाच नमः
969. मनगुये नमः
970. मवाचवे नमः
971. मनभुगय नमः
972. मगाह्याच नमः
973. मरुमुकाच नमः
974. ममेरे नमः
975. मेरे नमः
976. कर् नमः
977. मकरुकाच नमः

- 

मीभङ्ग-मङ्गर-रुगवङ्ग-भरुभङ्गभानि (भरुभङ्गिनि)

1. मीरुः — श्रीं कुर्वे नमस्कारम्
2. मुङ्गरुः — சுத்தமான ஹ்ருதயத்தை உடையவர்
3. म्भङ्गा — உயர்ந்தவர்
4. मङ्गः — (அவாக்கள்) அடங்கிய மனதை உடையவர்
5. रङ्गानिः — கருணையின் கருவூலமானவர்
6. रङ्गः — புற புலன்களை அடக்கியவர்
7. डिङ्गः — பொறுமை உடையவர்
8. मङ्गः — சந்திரன் போல் பிரகாசிப்பவர்
9. रुङ्गम् — (ஸம்ஸாரிகளின்) செயல்களை விடுத்தவர்
10. भङ्गः — மனதையும் புலன்களையும் ஸத்விஷயங்களில் நிறுத்தியவர்
11. मङ्गः — அழகுற எப்பொழுதும் காரியங்களில் முற்பட்டவர்
12. वङ्गः — மனதை அடக்கியவர்
13. मङ्गः — (ஸாஸ்த்ரம் மற்றும் குரு வாக்கியத்தில்) நம்பிக்கை உடையவர்
14. मङ्गः — (தக்ஷிணாமூர்த்தி வடிவில் காலவரையறையற்றவராக முந்தையவர்களுக்கெல்லாம் குருவாக) தொன்றுதொட்டு இருப்பவர்
15. मङ्गः — (மக்கள் நல்வழியில் வரமாட்டார்களா என்ற) அவா கொண்டவர்
16. मङ्गः — ப்ரஹ்மாவால் போற்றப்பட்டவர்
17. मङ्गः — விடாது நன்னடத்தையில் திறம்பட இருப்பவர்
18. मङ्गः — திறமைசாலி
19. मङ्गः — (வேதத்தின் உச்சியில்) வேதாந்தத்தில் (ஆசார்யனாக) நின்றவர்

20. मित्रः — ஸிவனாரின் (அவதாரமானவர்)
21. मुद्रप्रणयकः — தூயதை நன்கு போதிப்பவர்
22. वमी — (உணர்ச்சிகளை) தன் கட்டுக்குள் வைத்தவர்
23. विम्वरः — (மூல வடிவில்) உலகத்தை ஆள்பவர்
24. भृष्टः — சிறந்தவர்
25. मभृष्टः — மதிப்பிட முடியாதவர்
26. भलकृष्ट — (அத்வைதத்தின்) மூல (பாஷ்ய நூல்களை) செய்தவர்
27. भापी — யஜ்ஞங்களை (தான் காப்பாற்றவேண்டியவையாகக்) கொண்டவர்
28. भृष्टादिभित्तुः — தலைவராக பட்டாபிஷேகம் செய்விக்கப்பட்டவர்
29. भवेमः — அனைத்தையும் செய்யவல்லவர்
30. भृष्टः — பெரும் தேவன் (அல்லது பூதேவர்களுக்குள் சிறந்தவர்)
31. भृष्टः — சுகமும் துக்கமும் (அனுபவிக்கும் ஸரீரமெனும் உபாதிக்கு உட்புகுந்தவர்)
32. रुषः — உலக உற்பத்திக்கு காரணமானவர்
33. रुष्टः — அழுகையைப் போக்குபவர்
34. रुष्टः — (பாபங்களை) நீக்குபவர்
35. भृष्टः — கள்ளங்கபடமின்மை என்ற அழகை உடையவர்
36. मवः — (தோஷங்களை) அழிப்பவர்
37. रंमः — (உலகு) ஆள்வதை சுபாவமாகக் கொண்டவர்
38. रंमः — திறம்பட (உலகு) ஆள்வபர்
39. भृष्टः — சக்தியுடையவர்களில் சிறந்தவர்
40. भृष्टः — (பக்தர்களுக்கு) நலத்தை விளைவிப்பவர்
41. भृष्टः — (ஆத்மா, மனஸ், இந்த்ரியங்கள்) ப்ரஸன்னமாக இருப்பவர்

42. भिरः — உறுதியாக இருப்பவர்
43. भूवः — அசைவற்ற (பரம்பொருளாக) இருப்பவர்
44. भुवित्तः — தேவர்களால் போற்றப்படுபவர்
45. मधुः — என்றும் இருப்பவர்
46. भैभुवन्तः — இனிமை மிகுந்த முகமுள்ளவர்
47. भिक्षुवैगिनिधेविः — ஸித்தர்களாலும் யோகிகளாலும் வணங்கப்பட்டவர்
48. भैभः — (கருணையாகிய) உமையுடன் இருப்பவர் (அல்லது) சந்த்ரனை (போல் உபதேச அமுதம் பொழிபவர்)
49. भुणधुम्भुः — அம்ருதமயமான சுத்தமான உடலைக் கொண்டவர்
50. श्रीभाना — (ஞானமாகிய நீங்காத) செல்வம் உடையவர்
51. प्युभाना — (பக்தர்களின்) மிகுந்த அன்பிற்குரியவர்
52. एगद्धिः — உலகுக்கு தலைவர்
53. श्रीकृः — (உலகைக் காக்க) விடமுண்ட கண்டன் ஆனவர்
54. मित्रवद्धुः — (பக்தர்களிடம்) அன்புகாட்டுவதில் நிலைத்தவர்
55. माधुवः — சிவனை வழிபடுபவர்
56. मङ्गरविः — சங்கர என்ற பெயர் கொண்டவர்
57. वीरः — (தர்மத்தைக் காப்பதில்) வீரர்
58. मुविन्नी — ஸஞ்சாரத்தால் மங்களத்தைப் பரப்புவவர்
59. मुद्गैकृभुभिभाना — சுத்த பிரம்மத்தில் ஐக்கியமே தனது (உண்மை) வடிவமாக உடையவர்
60. श्रीपलः — முழு (பிரபஞ்ச வடிவினர்)
61. श्रीपलदम्भुः — அனைத்து மந்திரங்களாலும் போதிக்கப்படுபவர்
62. दुष्ट — (ஐம்) பூதங்களுக்கு உள்ளிருப்பவர்
63. दुष्टा — (ஐம்) பூதங்களை உருவாக்கியவர்

64. विदुः — எங்கும் நிறைந்தவர்
65. मरुता — (சிவனார் வடிவில் தேவர்களை அந்தந்த வடிவில் பிறக்கும்படி) கட்டளையிட்டவர்
66. मरुदेवी — தேவர்களின் (நலனுக்காக) முயற்சி செய்பவர்
67. कलिगीतमुरतिः — கலிக்கு பயப்படும் தேவர்களால் (தக்ஷிணாமூர்த்தி வடிவில்) வேண்டப்பட்டவர்
68. गुरुद्वी — முருகனை (குமாரில பட்டராக அவதரிக்கும்படி) உத்தரவிட்டவர்
69. गुरुगौरी — (அவ்வப்போது மலை) குறைகளை இருப்பிடமாகக் கொண்டவர்
70. विष्णुविदेवता — விஷ்ணு ப்ரஹ்மா (இவர்களை ஸநந்தனர் மற்றும் ஸுரேச்வரராக அவதரிக்கும்படி) உத்தரவிட்டவர்
71. गुरुः — (அஸத்துகளிடம் சொல்லத்தகாத) ரகசியமானவர்
72. गुरुमयः — (ஹ்ருதய) குறையில் உறைபவர்
73. गुरुः — (ப்ரஹ்ம வடிவில் அறியவொண்ணாது எவ்விடமும்) ஒளிந்திருப்பவர்
74. त्रिदः — அள்ளி வழங்குபவர்
75. त्रिदता — செல்வத்தை உருவாக்குபவர்
76. त्रुः — அறிஞர்
77. त्रुद्धु — மலையில் ஸஞ்சரிப்பவர்
78. त्रिदता — (உலகில் தர்மமெனும்) செல்வத்தை பராமரிப்பவர்
79. त्रुका — உலகைக் காப்பவர்
80. त्रुमः — ஜீவராசிகளுக்கு தலைவர்
81. त्रुवतः — ஜீவராசிகளை உருவாக்கியவர்
82. त्रुः — மங்களமானவர்
83. त्रुः — மனதிற்கினியவர்

84. रुचिधक् — பிறவிப்பிணிக்கு வைத்தியர்
85. रुतुपुष्पः — பக்தர்களால் பூஜை செய்யப்படுபவர்
86. पिनाकरुडा — (சிவனார் வடிவில்) பிநாகம் (என்னும் வில்லை) தாங்கியவர்
87. भङ्गलाङ्ग — (ஸத்துக்களின்) மண்டலத்திற்கு ஆத்மாவாக இருப்பவர்
88. भण्डवाक् — இனியன மொழிபவர்
89. भिडः — புன்னகை பூத்தவர்
90. भानुः — மரியாதைக்குரியவர்
91. भणुः — தேனையை (ஸாரமான ஆனந்தம் கொடுக்கும் பரம்பொருளானவர்)
92. भुविः — மௌனமாக சிந்திப்பவர்
93. भण्डुः — பேரொளிபடைத்தவர்
94. भण्डुवाक् — பெருமைக்குரியன சொல்பவர்
95. मलङ्कः — (பூமியை) அலங்கரிப்பவர்
96. मभलः — (முந்தைய பிறப்பில் சேகரித்து தீய எண்ணமாகிய) அழுக்கு இல்லாதவர்
97. मयः — பாவமில்லாதவர்
98. मलः — (எளிமை மற்றும் கபடமின்மையில்) குழந்தை போன்றவர்
99. मलैधम्मभुतुः — பெண்ணாசை அற்றவர்
100. मरुदुः — (வெளிப்படையாகவும் ஸூக்ஷ்மமாகவும்) சான்றோரிடையே இருப்பவர்
101. मरुदभ्यः — சான்றோருக்கு அடைக்கலமாக இருப்பவர்
102. मीली — சீலம் மிகுந்தவர்
103. मिवगुरुप्रेष्ठः — சிவகுருவின் ப்ரிய (மகனார்)
104. मरुभामुपूर — ஆர்யாம்பாவின் உயர்ந்த குழந்தை
105. मिवः — மங்களமானவர்

106. पराङ्कः — அப்பாலுக்கும் அப்பாலாய் இருப்பவர்
107. इयम्भिर्मङ्गेरिर्वभुभुवुः — முப்பத்து முக்கோடி தேவர்களால் நன்கு வணங்கப்படுபவர்
108. उरणीः — விசாலமான மனம் உடையவர்
109. भद्रुपः — ஸத்ய வடிவினர்
110. कालीरुतः — காலடியில் பிறந்தவர்
111. मन्त्रयः — இரண்டற்றவர்
112. विष्टुपतिः — கல்விக்கு தலைவர்
113. वरः — ப்ரஹ்மசாரியாக இருப்பவர்
114. वैष्टुः — (த்யானத்தால்) அறிய வேண்டியவர்
115. गिन्धुयः — சைதன்ய வடிவினர்
116. मुल्लिकपियः — சூர்ணிகா (பூர்ணா என்னும் நதியில் பால்யத்தில்) களித்தவர்
117. श्रीभद्रुत्तुगामुः — மதிப்பிற்குரிய அன்னையால் இல்லறம் (ஏற்கும்படி) வேண்டப்பட்டவர்
118. म्वैणीः — (இல்லறத்தை விட) உயர்ந்ததை மனதில் அசையாது கொண்டவர்
119. मिउरिमिकः — ஆசார்யனை சரணடைந்தவர்
120. श्रीभुपः — (குரு முதன்முறை பார்த்தபோதே ஞானப்) பொலிவுடைய முகமுள்ளவராக (திகழ்ந்தவர்)
121. श्रीरः — (அப்பொழுதே ஞான) லக்ஷ்மியைத் தாங்குபவராக (விளங்கியவர்)
122. मुद्गी — (உலகோருக்கு வழிகாட்டுவதற்கான) தேஜஸ்ஸைக் கொண்டவராக (குருவால் காணப்பட்டவர்)
123. मभितु — (சாஸ்த்ரத்தின்) உத்தரவை போதிப்பவர்
124. मुपिः — தூயவர்
125. उल्लः — (தேஜஸ்ஸால்) மிகவும் ஜ்வலிப்பவர்

126. भापुः — (பிறரின் நன்மையை) ஸாதித்துக்கொடுப்பவர்
127. म्लाना — வலுவானவர்
128. मन्विषुः — துறவறம் பெற விரும்பியவர்
129. मरिचपुत्रविदुः — (பூர்ணா) நதியில் உடல் முழுவதும் நனைத்தவர்
130. गुरुगुरुलक्ष्मणमृगमृगः — முதலை பிடித்ததை வ்யாஜமாகக் கொண்டு தாயிடம் துறவறத்திற்கு அனுமதி பெற்றவர்
131. मृगुः — (உடனே ஆபத்) ஸந்ந்யாஸம் பெற்றவர்
132. मन्वभी — புலன்களை அடக்கியவர்
133. पृथी — ஸந்ந்யாஸ மந்த்ரத்தை உச்சரித்தவர்
134. मन्मथगुह्यः — ஸம்ஸார (வாழ்க்கையை) தியாகம் செய்வதில் முனைந்தவர்
135. मन्विषुः — (துறவறத்தால் புதிய) பொலிவு பெற்றவர்
136. मृगैविदुः — கோவிந்த (பகவத்பாதரை மனதினால் குருவாக) வரித்தவர்
137. पृथुः — (குருவிருக்கும் இடம் நோக்கி) கிளம்பியவர்
138. पृथुमृगः — ஸத்குருவை சென்றடைந்தவர்
139. मृगै — (குருவினால் சிஷ்யனாக) ஆமோதிக்கப்பட்டவர் / ஞான நறுமணம் கொண்டவர்
140. निगमापुः — வேதாந்தத்தை அறிந்தவர்
141. एकानुभाषकः — ஒரே ஆனந்த ரஸமாக எப்போதும் இருப்பவர்
142. मीरुमृगपृथु — ஸ்ரீ பிரம்ம சூத்திரத்திற்கு வியாக்யானம் எழுதியவர்
143. एकद्वः — ஒரே தண்டத்தை கொண்டவர்
144. कषायपृथु — காவியை உடுத்தியவர்
145. रुद्रपुष्पमृगः — பக்தர்களாகிய உலகத்தோர் (தமக்கு) மாணவர்களாகக் கொண்டவர்

146. गैविचूरुगवद्भिः — கோவிந்த பகவத்பாதருக்கு பிரியமானவர்
147. रुभिर्भृङ्गपारी — (அவரது பூர்வாச்ரம புத்ரராகிய பர்த்ரு)ஹரியின் சக மாணவர்
148. भृङ्गैरुपलभ्यः — கௌட(பாதரின்) பாதங்களைத் தொட்டு (வணங்கியவர்)
149. भउङ्गमीभनद्वीवैत्रिभूपिउमन्त्रः — மாதங்க மஹாராணியின் வேண்டுகோளின்படி (அந்த ராஜ்ஜியத்தில்) நல்தர்மத்தை ஸ்தாபித்தவர்
150. यउउीरुमिपुदत्रुमभृण्यप्रवृकः — யதிகளுக்கு தீர்த்த முதல் புரீ வரை (தசநாமி) ஸம்ப்ரதாயத்தை ஏற்படுத்தியவர்
151. मन्त्रवन्त्राश्रयी — (முதியவர் வேடத்தில் வந்த) வியாசருடன் வாதம் புரிந்தவர்
152. मरुमिधृपरीवृः — பல சிஷ்யர்களால் புடைசூழ்ந்தவர்
153. पद्मपादभनषः — பத்மபாதரை (சிஷ்யனாக ஏற்று) பாதுகாத்தவர்
154. वैगप्रपुरुगमलः — யோகத்தினால் ஹரனின் மலைக்கு (கைலாயத்திற்கு) சென்றவர்
155. मनीउलिङ्गकुलकः — (சிவனார் அளித்த) ஐந்து லிங்கங்களை எடுத்து வந்தவர்
156. मन्त्रुलरुगीरुः — (ஸௌந்தர்ய லஹரியின் முன் பகுதியாகிய) ஆநந்தலஹரியை பெற்றவர்
157. केदरेमपुडिष्ठउ — கேதாரில் முக்தி லிங்கத்தை ப்ரதிஷ்டை செய்தவர்
158. नेपालवरलिङ्गकुउ — நேபாளத்தில் வர லிங்கத்தை வைத்தவர்
159. कम्भीरमिर्द्वामी — காச்மீரம் முதலான இடங்களில் வசித்தவர்
160. द्वादिभउपङ्गनः — கெட்ட வாதங்களுடைய மதங்களை கண்டித்தவர்
161. मीरुभृगिरिनाषादिद्विर्द्वामरः — ஹஸ்திகிரி (விஷ்ணு காஞ்சி) முதலான கேஷத்திரங்களுக்கு சென்றவர்
162. मुणीः — நல்லறிவு உள்ளவர்

163. रुद्ररुद्रैत्रिरुद्रः — (குமாரில) பட்டர் கூறிய (ஈசன் தேவையில்லை, கருமமே பலனளிக்கும் என்ற) ஸித்தாந்தத்தைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
164. ஸிதம்பரநரதி: — மண்டன மிசர் (மற்றும் அவரது பத்னியான) பாரதியை வெற்றி கொண்டவர்
165. பரகாயப்ரவேசம் செய்து காம சாஸ்த்ர நுணுக்கங்களை அறிந்தவர்
166. பரகாயப்ரவேசத்தின் போது குறைவில் (ஒளிக்கப்பட்டிருந்த தமது இயல்பு உடலை சிலர் எரிக்க முயன்ற போது) நரசிம்மரை வேண்டி எரிந்த தன் கரத்தாமரைகளை மீட்டுப்பெற்றவர்
167. கலைவாணியை வெற்றிகொண்டு ஸுரேஸ்வரரை துறவி ஆக்கியவர்
168. ஹஸ்தமலகரால் ஸேவிக்கப்பட்ட திருவடிகளைக் கொண்டவர்
169. தோடகாசார்யரால் நன்கு வணங்கப்பட்டவர்
170. சித்ஸுகர் உதங்கர் (போன்ற) நல்மாணவர்களால் வணக்கப்பட்ட திருவடியினர்
171. குணக்கடலானவர்
172. விருப்பப்படி (தனது மூல) சிவ வடிவம் எடுக்கக்கூடியவர்
173. கௌரியை ஈர்த்தவர்
174. உத்தமமான குரு
175. குருமார்களுக்கரசர்
176. நல்ல குணம் உடையவர்
177. (பக்தர்களைக்) காப்பவர்
178. (ரகசியங்களை) ஒளிப்பவர்
179. மனித வடிவம் கொண்ட (தெய்வம்)

180. निम्भः — மமதையற்றவர்
181. नरकासुरिः — நரகத்திற்கு எதிரி
182. नभः — வணங்கத்தக்கவர்
183. नपः — தலைவர்
184. निरङ्गः — அப்பழுக்கற்றவர்
185. निम्बूः — ஆசைகளை கட்டுப்படுத்தியவர்
186. निष्कलः — பகுக்க முடியாத (பிரமமே சொருபமானவர்)
187. निरुः — என்றும் இருப்பவர்
188. नभरूपविवेकवान् — பெயர் உருவம் (இரண்டும் ப்ரஹ்மத்தைக் காட்டிலும் வேறு என்ற) விவேகம் உள்ளவர்.
189. नलीकः — பொய்யற்றவர்
190. निक्षिपः — செயல்களுக்கப்பாற்பட்டவர்
191. नीरुक् — வலியற்றவர்
192. निरामीः — ஆசைகள் இல்லாதவர்
193. निरभयः — வியாதி இல்லாதவர்
194. निरुतिः — (யாருக்கும் தலை) வணங்கத் (தேவை) இல்லாதவர்
195. निःशृणकरः — ஸ்வதா (என்று சொல்லி செய்யும் பித்ரு காரியம்) இல்லாதவர் (ஸந்ந்யாஸி)
196. निःशृणकुश — ஸ்வாஹா (என்று சொல்லி செய்யும் தேவ காரியம்) இல்லாதவர் (ஸந்ந்யாஸி)
197. निरीश्वरः — (தனக்கு மேற்பட்ட) ஈசனில்லாதவர்
198. नीरूपकः — உருவற்ற (பரம்பொருளானவர்)
199. निशुः — குணமற்ற (பரம்பொருளானவர்)
200. निष्क — புண்ணிய பாபமற்ற (பரம்பொருளானவர்)

201. निवृषः — துக்கமற்றவர்
202. वमी — வசீகரிப்பவர்
203. निर्वृषः — பற்றில்லாதவர்
204. निवृषः — என்றும் வலுவானவர்
205. रुषः — உற்சாகமுள்ளவர்
206. उष्ट्रराम्यः — திருப்தியான ஜனங்களால் ஆஸ்ரயிக்கப்படுபவர்
207. भारङ्करी — (ப்ரம்ம ஞான நிலையை) நேரடியாக அனுபவித்தவர்
208. भविष्यः — (ப்ரம்ம ஞான நிலைக்கு) அருகில் சேர்ப்பிப்பவர்
209. भविः — தத்துவமறிந்தவர்
210. भावङ्कुरुः — (அன்றன்று) மாலை (எங்குள்ளாரோ அங்கேயே இரவு தங்கும்) வீடாக கொண்டவர்
211. वमी — புலன்களை கட்டுப்படுத்தியவர்
212. भव — உண்மை வடிவினர்
213. भाङ्करी — உண்மை(பொருளான பகவானை) உபாஸிப்பவர்
214. भाङ्किकः — சத்வ குணம் நிரம்பியவர்
215. भट्टः — கலாசாரம் நிரம்பியவர்
216. भवभिः — அனைவருக்கும் நண்பர்
217. भूराङ्कः — காமனை அழித்தவர்
218. भविष्टः — சிஷ்யர்களுடன் கூடியவர்
219. भङ्कनी — (வேத தாத்தரியத்தை) ஸங்க்ரஹம் செய்தவர்
220. भृङ्करी — மூத்தவர்
221. मली — சக்திமிக்கவர்
222. वाङ्गी — வாக்கு வன்மை மிக்கவர்

223. भित्तिरुता — அளவோடு பேசுபவர்
224. वाच्यमः — பேச்சை அடக்கியவர்
225. वरिष्ठः — மிக உயர்ந்தவர்
226. वृष्टापाष्टाधिकपदः — உரைகளை சரித்திரங்கள் (போல் அழகுற உருவாக்குவதில்) திறமிக்கவர்
227. परमः — எல்லாவற்றிலும் உயர்ந்தவர்
228. परिशुः — சுற்றிலும் இருக்கும் (பரம்பொருளானவர்)
229. पूरुः — பக்குவமானவர்
230. पूरुः — அறிவாளி
231. पीतः — மகிழ்வுடன் இருப்பவர்
232. पिव्वरुः — பிரியமாக பேசுபவர்
233. पूतरी — (தோஷங்களை) அறவே ஒழிப்பவர்
234. रूचैगी — தஹர யோகம் அறிந்தவர்
235. पूरुः — வணங்கிய இயல்பினர்
236. पूनिरुपः — கேள்விகளுக்கு (பதில்களை) நிரூபித்தவர்
237. परङ्गुः — எல்லையை அடைந்தவர்
238. परमभुतः — பாசத்திலிருந்து விடுபட்டவர்
239. परविता — பரத்தை அறிந்தவர்
240. पूतगीरुता — உள்நோக்கிய பார்வையுடையவர்
241. मरिष्ठरविता — (ப்ரபஞ்சமாம் தோற்றத்திற்கு) ஆதாரத்தை அறிந்தவர்
242. मृष्टः — (அருள்மழைபொழிய) காரணமில்லாதவர்
243. एकवर्षी — ஒரே இறை எனும் வாதத்தை கொண்டவர்
244. दृष्टमरुः — இரட்டையை ஒப்பாதவர்

245. धृष्टुः — தன்னில் நிலைத்தவர்
246. धृष्टा — (மோக்ஷ நிலையில் தன்னை ஆள பிறர் இல்லாது) தன்னைத் தானே ஆள்பவர்
247. विष्टा — வியாபித்து ஆள்பவர்
248. भैनी — மௌனமாய் இருப்பவர்
249. धृक्मः — தானே ஒளிர்பவர்
250. धृष्युः — (மற்றொருவரை எதிர்பாராமல்) தாமே திறமிக்கவர்
251. भ्रुञ्ज — மேன்மை பொருந்தியவர்
252. म्रुपः — உருவமில்லாதவர்
253. म्रुतुः — (எளிதில்) விளங்காதவர்
254. पं द्रिः — மிகவும் உயர்ந்த ஜோதியானவர்
255. पं पद्भा — மிகவும் உயர்ந்த பதவியானவர்
256. पं णभ — மிகவும் உயர்ந்த உறைவிடமானவர்
257. पः कृष्ट — மிகவும் உயர்ந்த எல்லையானவர்
258. पः मक्तिः — மிகவும் உயர்ந்த சக்தியானவர்
259. पः गतिः — மிகவும் உயர்ந்த கதியானவர்
260. पः भा ङकः — மிகவும் உயர்ந்த சேருமிடமானவர்
261. पं वभु — மிகவும் உயர்ந்த பொருளானவர்
262. पं र्द्ध — மிகவும் உயர்ந்த பிரம்மமானவர்
263. पं पुरः — மிகவும் உயர்ந்து முன்னின்றவர்
264. पः यः — மிகவும் உயர்ந்ததை அடைவிப்பவர்
265. पौ षवः — மிகவும் உயர்ந்த த்யானவிஷயமானவர்
266. प्माकुङ्ग — மிகுந்த சாந்தமே சொருபமானவர்

- 58

289. कङ्कभानिः — மாணவர்களால் கொண்டாடப்படுபவர்
290. नारद्विः — நாரதர் முதலியவரால் மிகவும் போற்றப்பட்டவர்
291. नभः — (பகவானை) வணங்கும் சுபாவமுடையவர்
292. नरीनरनवकुतिः — பெண்களோ ஆண்களோ (கண்டிராத) அபூர்வ வடிவினர்
293. वृभलैभिनिराश्वी — வியாசர் ஜைமினி ஆகியோருடன் வாதம் புரிந்தவர்
294. मारदविषी — சாரதையை வென்றவர்
295. मभी — அடக்கம் கொண்டவர்
296. भृश्वराददृधाम्भः — ஸுரேஸ்வராசார்யருக்கு தனக்கு (நிகரான ஸந்ந்யாஸ) ஆஸ்ரமத்தை கொடுத்தவர்
297. भुरिकेभरी — சிந்தனையாளர்களில் சிம்மம்
298. मद्धिउदिवाडुकुडरावैदिकवडुकुडा — (சூட்டினால்) முத்திரைகள் தரித்துக்கொள்வது போன்ற சாஸ்த்ரம் தடுத்த செயல்கள் அறவே அற்ற வைதிகமாக பாதையை அமைத்தவர்
299. कुकुलानलकुम्भकुमारिलकुनतिः — உமித்தீக்கூட்டத்தின் இடையே இருந்த குமாரில (பட்டரால்) வணங்கப்பட்டவர்
300. कुडककुमकुडुलिमः — கடினமான மலைகள் போன்ற துஷ்ட வாதங்களை (அழிக்கும்) வஜ்ராயுதமானவர்
301. कविकेभरी — கவி இயற்றுவதில் சிம்மம்
302. कुवादिभदभडुपश्वभुः — மதம் பிடித்த யானைகள் போன்ற துர்வாதிகளை (வீழ்த்தும்) சிங்கம் போன்றவர்
303. कलिनमनः — கலியை நாசம் செய்பவர்
304. वैगरीगरुः — யோகத்தால் நோயை நீக்கியவர்
305. भृभृवना — ஞான (பாதையை) திரிபற அறிந்தவர்
306. मभितुडुतिः — அளவற்ற பொலிவுடையவர்

307. **एउएनपुडिहृमुभुनैसृएनभुः** — ஜைனர்களின் இடைஞ்சல்கள் மற்றும் ஸ்தம்பன உச்சாடனங்களுக்கான மந்த்ரங்களை முறியடித்தவர்
308. **वैमेषिकविमेषेक्षिविमेषविपश्चिः** — வைசேஷிகர்களின் முக்கியமான கூற்றுகள் வறண்டுபோகும்படி செய்வதில் நிபுணர்
309. **निरभुद्धैतिभुत्तुमैवरागवडागभः** — தலையாய த்வைதிகளாகிய சைவர்கள் மற்றும் பாகவத மதத்தவர்களின் ஸாஸ்த்ரத்தை நிராகரித்தவர்
310. **काञ्चीनगरनिम्नद्वारमेनपुपाचिउः** — காஞ்சீபுர நகரத்தை (ஆசார்யாளின் ஆஜ்ஞைப்படி மீண்டும்) நிர்மாணம் செய்துகொடுத்த ராஜஸேனன் என்ற அரசனால் பூஜிக்கப்பட்டவர்
311. **वरालयनिम्नउ** — (ராஜஸேனன் மூலம்) வரதர் ஆலயத்தை (புனர்)நிர்மாணித்தவர்
312. **एकभुनपयैद्वः** — ஏகாம்ரநாதரின் இருப்பிடத்தை (ஜீர்ண) உத்தாரணம் செய்(வித்)தவர்
313. **गुरुभुपिङ्गलाभाभुपयः** — (காமாக்ஷி மூலஸ்தானமாகிய பிலாகாச) குறையில் இருந்த ஜீவகலையின் உக்ரத்தை நீக்கியவர்
314. **कालपयः** — (சிவனார் வடிவில்) காலனையே கண்டித்தவர்
315. **कभकेष्टुपराक्षिः** — காமகோஷ்டம் (என்ற புண்ய) பூமியை தன் விளையாட்டு இடமாக கொண்டவர்
316. **कभकेष्टिपयम्यः** — (காமாக்ஷியாம்) காமகோடியின் பாதங்களை ஆஸ்ரயித்தவர்
317. **कभक्षिवरिवभुत्तु** — காமாக்ஷிக்கு (பலவித) சேவைகளை செய்தவர்
318. **कालभुष्टिपराक्षिः** — காலஹஸ்தீஸ்வரரை பூஜித்தவர்
319. **हृमुपेनपुपुपमैधालमिरःपदः** — ஸேஷாசலத்தின் உச்சியை எளிதில் அடைய அனுகூலமான படிக்கட்டை அமைக்கச்செய்தவர்
320. **द्विः** — தெய்வீகமானவர்
321. **पीवृद्धवचमे नभः** — தெய்வீக பிரம்ம வர்சஸ் உடையவர்

322. पीनरबी — தீனர்களை காப்பவர்
323. एषः — அல்பத்தனத்தை நீக்குபவர்
324. देवदेवः — தேவர்களுக்கும் தேவர்
325. पीनरूः — தீனர்களுக்கு உறவினர்
326. एषिः — அன்பிற்குரியவர்
327. पीनरूरू — தீனர்களின் தீனத்தன்மையைப் போக்குபவர்
328. देवदेवः — தோஷங்களிலிருந்து தூரத்திலிருப்பவர்
329. देवरीषुः — துஷ்டர்களுக்கு எதிரி
330. देवमःश्रुतिः — துர்வாசரால் சிலாதிக்கப்பட்டவர்
331. एषः — அல்பத்தனம் இல்லாதவர்
332. देवदेवदेवः — பொருள் முதலியவற்றில் ஆசையை விட்டவர்
333. देवः — குற்றங்களை (விலக்குவதற்காக அவற்றை) அறிந்தவர்
334. एषः — தொலைவில் உள்ளவற்றை காண்பவர்
335. पीनरू — (வருங்காலத்தை) வெகுமுன்பே பார்க்கவல்லவர்
336. देवदेवः — மோசமான நிலையை அகற்றுபவர்
337. एषः — ஏழ்மையை கட்டுப்படுத்துபவர்
338. एषी — தயை உடையவர்
339. एषः — புத்தியில் உள்ள குறைகளை மிச்சமில்லாமல் சிதைப்பவர்
340. विभूतैः — அத்வைதத்தின் வைபவத்தை விஸ்தாரம் செய்தவர்
341. देवदेवदेवः — க்ஷேத்ராடன முறைப்படி முழு பாரத மண்டலத்தையும் சுற்றியவர்
342. कैलाशमी — கைலாசத்தை சேவித்தவர்

343. गन्तीनारायणपदम्यः — பத்ரிநாராயணரின் பாதங்களை ஆசிரயித்தவர்
344. कामरूपिनः — காமரூபம் (அஸ்ஸாமில் உள்ள தேவியை) அர்ச்சித்தவர்
345. कामः — காமம் இல்லாதவர்
346. कामीश्वरमेवकः — காசமீரத்தில் ஈசனுக்கு சேவை செய்தவர்
347. श्वरीश्वरकाशेष्टभावाकाक्षीभनीप्यः — அவந்தீ த்வாரகா அயோத்யா மாயா காஞ்சீ ஆகிய க்ஷேத்ரங்களை விரும்பியவர்
348. कालीभद्ररिश्वरभृद्वीप्यारगः — காளிகட்டம், ஹரித்வார், ஜம்பு (ஜம்மு) தேவி, பிரயாகை ஆகியவற்றுக்குச் சென்றவர்
349. श्रीमैत्रेयस्यत्राघपुत्रेष्टभनीभगः — ஸ்ரீசைல ஈசன், ஜகந்நாதம், புருஷோத்தமம், பீம் (சங்கர க்ஷேத்ரங்களுக்கு) சென்றவர்
350. शृङ्गेष्ट्विनीविभूवाभिनीमेवनापरः — தர்யம்பகம், உஜ்ஜயினி, விந்த்யவாசினி (க்ஷேத்ர தெய்வங்களை) ஆர்வத்துடன் வணங்கியவர்
351. मेरुकृकुभारीगः — சேது, கன்யாகுமரி (க்ஷேத்ரங்களுக்கு) சென்றவர்
352. एनारुनएनारिगः — ஜனார்த்தன (க்ஷேத்ரத்தில் இருந்த) ஜனங்களின் கஷ்டத்தைத் தொலைத்தவர்
353. शत्रुप्रवैश्याध्वधामलपदम्यः — திருவநந்தபுரம், வ்யாக்ர (க்ஷேத்ரம்) மற்றும் திருச்சூரை நாடியவர்
354. कालीकलः — காலடியில் (பிறந்த ஞான புஷ்டியுடன் கூடிய) யானைக்குட்டி
355. कलः — (காரியங்கள் செய்வதில்) திறமிகுந்தவர்/முனைந்தவர்
356. भरःमरापीरगः — குளங்கள், (அவற்றின் கரைகளில் அடர்ந்திருக்கும்) புல்லுகள், நீர்வீழ்ச்சிகள் (இடையே) ஸஞ்சரித்தவர்
357. कृष्णकलएपाश्र्वरुमैलभनीभगः — கர்ணாடகம், ஆந்த்ரம், பாண்டியம், சேரம் மற்றும் சோழ நாடுகள் அனைத்திலும் ஸஞ்சரித்தவர்
358. श्रीनीपतिश्वरैणकाशेष्टवनाम्यः — வில்வவனம் (வைகாவூர்), நீபவனம் (ஆலவாய்), தில்லைவனம் (சிதம்பரம்), ஆலங்குடி, சாயாவனம் (சாயக்காடு), வெண்காடு (ஆகியவற்றை) நாடியவர்

359. भर्तृमीरङ्गभण्डारक्षमाविप्रसम्यः — மதிக்கப்பெறும் ஸ்ரீரங்கம், மதுரை, மருதூர், வில்லிபுத்தூரை நாடியவர்
360. श्रीपल्लवश्रीरङ्गाक्षमुच्यते — அகிலாண்டேஸ்வரிக்கு ரத்ன தாடங்கமாக யந்திர ராஜமாகிய (ஸ்ரீசக்ரத்தை) அணிவித்தவர்
361. कञ्जिगुणमूर्तुमुद्रापरिभुः — காஞ்சீ (க்ஷேத்ர பிலாகாசமாகிய) குறையை மூடும்படி (ஸ்ரீ)சக்ர ராஜத்தை மூடியாக வைத்தவர்
362. सुभृष्टैर्निलाकमलिङ्गमेवपुत्रः — பூமி, ஜலம், தேஜஸ், காற்று, ஆகாசம் (ஆகிய பஞ்ச பூத க்ஷேத்ரங்களான காஞ்சீ, திருவானைக்கா, திருவண்ணாமலை, காளஹஸ்தி, சிதம்பரம் இங்குள்ள) லிங்கங்களை ஸேவிப்பதில் ஆதரவு கொண்டவர்
363. भट्टवृक्षभूषी — ஸத்யவ்ரதம் (எனப்படும் காஞ்சீ) க்ஷேத்ரத்தில் வஸித்தவர்
364. कामकेरिभण्डः — காமகோடி மடத்தை நிலைப்பிடமாக கொண்டவர்
365. पिन्धुभण्डमुभैलिङ्गः — சிதம்பர ஸபையில் மோக்ஷ லிங்கத்தை வைத்தவர்
366. मलिङ्गकः — (ப்ரஹ்ம ஸ்வரூபமாக) தனிப்பட்ட அடையாளம் இல்லாதவர்
367. समुद्रमभृङ्गलिङ्गः — ருஷ்யசிருங்கர் ஆசிரமத்தில் போக லிங்கத்தை வைத்தவர்
368. उभृी — (உலகெங்கும் பரவியிருக்கும் ஸத்யத்தை அறிவதற்கான) ருதம்பரா (ப்ரஜைஞ எனப்படும் ஞானத்தை) கொண்டவர்
369. मारुभर्तृमैः — சாரதையால் மதிக்கப்பட்ட (நீ பூமியில் ஆங்காங்கு இருந்து மக்களுக்கு அருள வேண்டும் என்ற) வேண்டுகோளை விடுத்தவர்
370. भवः — எல்லாம் அறிந்தவர்
371. भवपापुत्र — எல்லா பாபங்களையும் நீக்குபவர்
372. मारुभण्डुमारुपीपावः — சாரதையின் நிற்பிடத்தில் சாரதா பீடத்தை நிறுவி பவித்ரமாக்கியவர்

373. मारणभूपनपुत्रमृगगिरिभूतः — சாரதையை ஸ்தாபித்ததால்
ருச்யச்ருங்ககிரியை சிறப்படையச்செய்தவர்
374. ममरीरवणैवृक्षकामकैरिभंभिदिः — அசரீரியின் சொல்படி காஞ்சி மடத்தை
நிறுவி வளர்த்தவர்
375. कामकैरिभरुपीभपृक्षमृभरुभः — காமகோடி மஹா பீடத்தில்
காணப்பட்ட பெரிய மணியைப் போன்றவர்
376. कलशः — (சிவனார் வடிவத்தில்) யமனை அடக்கியவர்
377. कामपुक् — விரும்பிய (பலன்களை) அளிப்பவர்
378. कशुः — அன்பிற்குரியவர்
379. मारणैवृक्षपुः — சாரதையையே ஜயிக்கும் வாக்கை வாயில் கொண்டவர்
380. कामकैरिपरगैश्री — காமகோடி பூமியை தனது கொட்டில் போல்
(இருப்பிடமாக) கொண்டவர்
381. कशुक्कुलमोपरः — யதிகளின் குழாமுக்கு தலையாயவர்
382. मिथुमरुपरजनवृक्षैरुपुः — சிஷ்யர்கள் கூட்டத்திற்கு பர (வஸ்துவின்)
ஞானமாகிய கொடி (வளருவதற்கான) ஊட்டச்சத்தை அளிப்பவர்
383. भणभयभणभयमैकुकेरलपुक्षु — மடங்களின் ஆம்நாய (ஸம்ப்ரதாயங்களைத்
தெரிவிக்கும்) பெரியதான ஆம்நாய ஸேது என்ற கேரள (தேசத்தில்
ப்ரஸித்தமான?) நூலை யாத்தவர்
384. पुत्रुक्षीपुभुपमिधुगभविरेणः — தீர்த்த முதல் புரீ வரையிலான சிஷ்ய
ஸம்ப்ரதாயங்களைப் பாகுபடுத்தியவர்
385. मन्त्रैरुणिपुवमरुक्षुक्षुगभः — (அதில்) ஸரஸ்வதீ என்பதற்கு முன்பு
ஆநந்த இந்திர (என்ற இரு) பதங்களும் (தனித்தனியே பயன்படுத்தப்படுவதற்கான)
முறையையும் (வகுத்தவர்)
386. मन्त्रुभयरुनिपुक्षुपुत्रु — ஆநந்தமய (அதிகரண தெளிவாக்கத்தால்
லௌகிக) ஆநந்தமே ப்ரஹ்மம் (என்று சொல்பவர்களை) ஜயித்து
புகழ்பெற்ற சொல்லாண்மையை உடையவர்

387. वैगेश्वरानिरुः — யோகேஸ்வரரை ஆராதிப்பதில் முனைந்தவர்
388. वैगृः — யோக்யதை உடையவர்
389. वैगविर् वरः — யோகம் அறிந்தவர்களில் சிறந்தவர்
390. भुभिः — செளக்கியமாக இருப்பவர்
391. भुभिरः — அசைக்க முடியாதவர்
392. भिरः — மென்மையானவர்
393. भूभुः — அழியாதவர்
394. भूभा — உறுதித்தன்மையே (வடிவமானவர்)
395. भ्रिडिपूः — (தன் சுய) நிலையில் (உறுதியாக நிற்கும் தன்மையை) அருள்பவர்
396. भृवृउपदभृभृक्षीवः — (அவதார இறுதியில்) ஸத்யவ்ரதம் (எனப்படும் காஞ்சீ) க்ஷேத்ரத்தில் ப்ரஹ்மத்தில் ஒன்றியவர்
397. भमरीरवन्ता — உடலற்றவர் (உடலில் அபிமானம் அற்றவர்)
398. भृगुपारभंभारपारउरभृकुडिरिः — தாண்டுவதற்கரியதான எல்லையற்ற(தாகத் தோன்றும்) ஸம்ஸாரத்தின் எல்லைக்கு சேர்ப்பிக்கும் படகானவர்
399. भृगुविवभंभारुभृउलकुभृवैवः — (காமம் க்ரோதம் முதலிய) எதிரிக்கூட்டங்களை அறுத்ததால் சாந்தமடைந்த மனதினால் (ப்ரஹ்ம ஸ்வரூபமாகிய) தன் பெருமையை அறியக்கூடியவர்
400. भनउरः — சோர்வில்லாதவர்
401. भउलिउः — ஒப்பிட முடியாதவர்
402. भदृडुः — நன்னடத்தை உடையவர்
403. भपूदमनः — தரிசனம் செய்ய உகந்தவர்
404. भभृक्षीपारदृभृ — (ந்யாயம் முதலிய) ஆறு தரிசனங்கள் (என்ற சாஸ்த்ரங்களில்) கரைகண்டவர்

405. धरुश्रीउभासः — (வர்ணம் பதம் முதலியதாக உபாஸனா ஸாஸ்த்ரங்களில் சொல்லப்படும்) ஆறு பாதைகளையும் கடந்த (ப்ரஹ்மத்தில் ஒன்றிய) மனதை உடையவர்
406. शृङ्खः — குற்றமில்லாதவர்
407. इक्षुः — வெல்ல இயலாதவர்
408. शृङ्खः — தாபப்படாதவர்
409. इक्षुः — மிரளச்செய்யவியலாதவர்
410. शृङ्खः — மீண்டும் பிறவாதவர்
411. शृङ्खः — சுத்தமானவர்
412. शृङ्खः — தன் சொருபத்தை அறிந்தவர்
413. इक्षुः — விழிப்படைந்த ஆத்மாவானவர்
414. शृङ्खः — (பிறவி) பயன்பெற்றவர்
415. इक्षुः — பலமான (ஞான) ப்ரகாசமுடையவர்
416. शृङ्खः — ஆபத்துகளில் இருந்து மீட்டெடுப்பவர்
417. शृङ्खः — (சம தமாதி குணங்களால் ஞானத்தீ) நன்கு ஒளிரப்பெற்றவர்
418. इक्षुः — (சமயோசித புதிய யோசனைகள் வரக்கூடிய) அறிவுக்கூர்மை நிறைந்தவர்
419. शृङ्खः — சாரத்தை அறிந்தவர்
420. शृङ्खः — எல்லா சாஸ்த்ரங்களையும் அறிந்தவர்
421. शृङ्खः — அமுதமனைய இனிய மொழியினர்
422. शृङ्खः — சூக்கும அறிவுள்ளவர்
423. शृङ्खः — மோகமென்னும் இருளுக்கு சூரியன் போன்றவர்
424. शृङ्खः — பெரும் புகழ்கொண்டவர்
425. शृङ्खः — பெரும் ஒழுக்கத்தை கொண்டவர்

426. भद्रैः — பெரும் காரியத்திறன் பெற்றவர்
427. भद्रभूतिः — பெரும் முனிவர்
428. भद्रवीथः — மதிக்கத்தக்கவர்
429. भद्रभट्टः — பெரும் (ஆத்ம) பலத்தை கொண்டவர்
430. भद्रभट्टः — மரியாதைக்கு உரியவர்
431. भद्रभूतिः — பெரும்பொருளை அறிந்தவர்
432. भद्रभूतिः — மாயா தத்துவத்தை அறிந்தவர்
433. भद्रभूतिः — பதட்டமில்லாதவர்
434. भद्रभूतिः — பூ மண்டலத்தில் (தலைசிறந்த) பண்டிதர்
435. भद्रभूतिः — தாயாரின் க்ருத்யத்திற்கு ஒத்தாசை செய்யாத கேரள ப்ராஹ்மணர்களுக்கு சாபம் அளித்தவர்
436. भद्रभूतिः — நினைத்தவுடன் (வருவேன் என்ற) தாயிடம் செய்த ப்ரதிஜ்ஞையை சொல்லியவண்ணம் செய்தவர்
437. भद्रभूतिः — (சிவனார் வடிவில்) ஸூர்யனையும் சந்த்ரனையும் கண்களாகக் கொண்டவர்
438. भद्रभूतिः — தோளைக் கடைந்ததால் உருவான அக்னியால் தாய்க்கு தீயளித்தவர்
439. भद्रभूतिः — ரஸமான (பரம்பொருளை) அறிந்தவர்
440. भद्रभूतिः — வேத ஸாஸ்த்ரங்களின் சுவையை அறிந்தவர்
441. भद्रभूतिः — ஆசை துவேஷம் ஆகியவற்றை நீக்குபவர்
442. भद्रभूतिः — மகத்தானவர்
443. भद्रभूतिः — ராஜ யோகி
444. भद्रभूतिः — விரும்பியதை அடைந்தவர்
445. भद्रभूतिः — ஆசைகள் இல்லாதவர்

446. भावुवङ्गलः — அன்னை போன்ற அன்புடையவர்
447. कामउत्कलापूककायउरनिवेमनः — காம ஸாஸ்த்ர கலையை அறிய (ஒரு இறந்த அரசனின் சரீரத்தில்) பரகாய ப்ரவேசம் செய்தவர்
448. कवुरइविनिम्नलखेएडुकविपुषः — (அவ்வடிவில்) சிறந்த காவ்யத்தை நிர்மாணித்ததால் உயர்ந்த கவி என்ற புகழைப் பெற்றவர்
449. भाएट एट ङिः — இனிமையில் முன்னிற்கும் சொற்களைக் கொண்டவர்
450. भएराणीमभानिः — மதுரையை (ஆண்ட) அரசனால் மதிக்கப்பட்டவர்
451. ऐडिःपुरेमविउः — ஜ்யோதிபுரத்தின் அரசனால் வணங்கப்பட்டவர்
452. पारेण्यपुरभिडिः — ஜயபுரத்துக்கு அப்பாலும் வசித்தவர்
453. विरुपाबभुलमेवी — விருபாக்ஷ தலத்தில் நெடிது தங்கியவர்
454. विष्वापुप्रीपः — விஜயபுரத்திற்கு (விஜயம்) செய்தவர்
455. विमिममविरुडिः — விதிஸா தேசத்தில் மகிழ்ந்திருந்தவர்
456. विम्वनाषपडपियः — விஸ்வநாதபுரியான (காசியை) விரும்பியவர்
457. पाएलीपुडुंभुनः — பாடலிபுத்திரத்தில் தங்கியவர்
458. विष्णुपाडुमेवनः — (கயா) விஷ்ணுபாதத்தை நன்கு சேவித்தவர்
459. गयवएडभुलभुः — கயாவில் ஆலமரத்தடியில் தங்கியவர்
460. एडमलनिरुडिः — பத்ராசலத்தில் ஆழ்ந்த அபிமானமுள்ளவர்
461. वरुवनउमझरी — பிருந்தாவன பகுதியில் சஞ்சரித்தவர்
462. वृभामलविलाम्यः — வ்யாஸாசல குஹையையும் அண்டியவர்
463. उङ्गरकुवविरुडिः — ஓங்கார குண்டத்தில் மகிழ்ந்திருந்தவர்
464. भल्लिकारुनभगुणीः — மல்லிகார்ஜுனத்தில் ஆழ்ந்துள்ள மனத்தினர்
465. मीपङ्गनपङ्गभुमिपृषवनिधेविउः — திருவையாற்றில் சிவபெருமானின் அடியார்கள் குழுவினால் வணங்கப்பட்டவர்
466. मदेविलगुनरामः — அஹோபில குகையில் ஓய்வெடுத்தவர்

467. कभलाङ्कः — தாமரைக்கண்ணர்
468. कलानिधिः — கலைகளுக்கு இருப்பிடமானவர்
469. कलिशंभी — கலியை துவம்சம் செய்பவர்
470. कामरूपः — தன்னிச்சையில் உருவை மாற்றிக்கொள்ளக்கூடியவர்
471. कामाक्षः — விரும்பிய இடத்திற்கு செல்லவல்லவர்
472. कलामयः — கலைகளே வடிவமானவர்
473. परमेशी — பரம்பொருளில் நிலைத்தவர்
474. वसपुष्पः — ப்ராணனை வசப்படுத்தியவர்
475. कामाक्षीमण्डितकः — காமாக்ஷியை சேவிக்க விரும்பியவர்
476. पुष्पदन्तः — உயிர் அளிப்பவர்
477. पुष्पशी — அன்பிற்குரியவர்
478. पुष्पः — வலுவானவர்
479. भवउत्पृथुः — எல்லா சாஸ்த்ரங்களிலும் ஸ்வதந்த்ரமாக ஸஞ்சரிக்கவல்ல புத்தியைக் கொண்டவர்
480. धृतराज — ஆத்ம தளைகளற்றவர்
481. नाभिकर्तृता — நாஸ்திகர்களுக்கு முடிவுகட்டியவர்
482. पुनीः — மிக்க புத்திமான்
483. मुमनसविता — (யோக) ஆஸன மார்க்கத்தை அறிந்தவர்
484. दूरपुष्पकेक्षरः — ஜைனர்களின் அத்துமீறல்களை பொசுக்கியவர்
485. दक्षिणनिधिः — பெருந்தன்மைக்கு இருப்பிடமானவர்
486. मरुतः — பாதிக்கப்படாதவர்
487. दक्षः — சாமர்த்தியமானவர்
488. दक्षिणदिक्षुः — தென் திசையிலிருந்து (வந்த) ஸித்தர்

489. कालत्रयविना — முக்காலமும் அறிந்தவர்
490. मुमुक्षुः — இறை நம்பிக்கையாளர்
491. मुद्गह — கட்டளை பிறப்பிப்பவர்
492. मुपैरुधः — சாதாரண மனிதனினும் அதிக சக்தி உடையவர்
493. शमुकपालिकभउत्थः — காபாலிக மத வழிமுறைகளை த்வம்ஸம் செய்தவர்
494. कभिनीविभापः — (லௌகிக) ஆசைகளில் ஈடுபட்ட பெண்களிடம் பாராமுகமானவர்
495. कभूः — நண்பனாக கருதத்தக்கவர்
496. कम्पुक् — கர்மானுஷ்டானங்களின் பலனை எதிர்பாராதவர்
497. कम्पूः — கர்மானுஷ்டானங்களுக்கு ஹிதமானவர்
498. कृती — செய்யவேண்டியவற்றை செய்துவிட்டவர்
499. कलूगुमीलः — கல்யாண குணங்களை உடையவர்
500. क्रिभुतः — செயல்களிலிருந்து விடுபட்டவர்
501. कृपाधनः — கிருபையால் நிறைந்தவர்
502. कीर्तिभाना — புகழுடையவர்
503. कुत्रैगैमपुएउउएगङ्गनः — யோக லிங்க பூஜையை செய்தமையால் உலக மக்களைக் காத்தவர்
504. पभिल्लपुराण्मीलान्जनपात्रिः — தம்மில்லபுரம் என்ற ராஜ்யத்தில் பாலா (த்ரிபுரஸுந்தரியை) அர்ச்சிக்கும் அரசனால் பூஜிக்கப்பட்டவர் (?)
505. वेणुबुध्दः — வேதாந்தத்தில் சூரியன் போன்றவர்
506. हनपद् — ஞானத்தில் சந்திரன் போன்றவர்
507. त्रिभुवन्निधिः — சகல ஐஸ்வர்யங்களையும் பொழிபவர்
508. त्रिपालमहूपालवृध्वैपमकुता — நேபாள தேச அரசனான வருஷ தேவனுக்கு உபதேசித்தவர்

509. कैलामकुण्डमुपमुपुञ्जविपिः — கைலாஸ பர்வதத்தில் சிவனை பூஜிக்கும் வழிமுறை வகுத்தவர்
510. भैरवउत्तनिष्कामपदः — புத்தமதக்கூட்டத்தை நீக்குவதில் திறம்பெற்றவர்
511. वैराग्यैपकः — வைராக்யத்தை போதிப்பவர்
512. भृणीभर्त्तुः — அறிவாளிகளுக்குள் மணி போன்றவர்
513. दिव्यदक्षी — தெய்வீக (ஞான) த்ருஷ்டி உடையவர்
514. देवदेवुरुश — (பூமியில் அதர்மம் பெருகியதால் ஏற்பட்ட) தேவர்களின் வருத்தத்தை அகற்றியவர்
515. मरुतः — குழப்பம் இல்லாதவர்
516. पुमत्रकभलाम्बुदरिद्राक्षणीविपिः — ப்ரஸன்னமடைந்த லக்ஷ்மியால் ஏழை அந்தணப்பெண்ணுக்கு செல்வம் கொடுப்பித்தவர்
517. मधुलकुमुभपृभलुभुभिउरुः — முழுதும் மலர்ந்த பூவனைய மெல்லிய அரும்பு போன்ற புன்முறுவலை உடையவர்
518. विष्णुपरिपुत्रैवाभिपुङ्गवभंसवः — சிந்முத்ரையாலேயே தலைசிறந்த சீடர்களின் சந்தேகங்களை விரட்டியவர்
519. हरिहरिवरेमरुभुभाङ्कउरवः — (நரஸிம்ஹரின் மனமுவக்கும் வாக்கின்படி) சிங்கத்தில் பயங்கர குரலாகிய அட்டஹாஸத்தால் பஸ்மமாகிய காபாலிகனுக்கு (உடலைக்கொடுக்க முன்வந்தவர்)
520. मभामिउमृणवृडुपाङ्कानिउपुणः — தன்னை அண்டிய ஸுதன்வா (என்ற அரசனால்) தமது பாதுகைகளுக்கு நித்ய பூஜை செய்யப்பெற்றவர்
521. नभःमेधी — நமஸ்காரங்களையெல்லாம் பெறத்தகுந்தவர்
522. नभपरः — (பகவானின்) நாமங்களை முக்கியமாகக் கொண்டவர்
523. नविउमेधविपुः — தேவ லோகம் முழுவதும் மகிழுற வைத்தவர்
524. एकद्वी — ஒரு தண்டம் உடைய (ஸந்ந்யாஸ ஸம்ப்ரதாயத்தைச்) சேர்ந்தவர்
525. कषायी — கஷாயம் தரித்தவர்

526. भृङ्गी — (தலையை) முண்டனம் செய்து கொண்டவர்
527. पण्डितभैरवः — பௌத்தத்தை கண்டித்தவர்
528. विगृह्यन्निष्कृतिविगृह्यन् — சித்தர்கள் என்று (தம்மைத்தாமே சொல்லிக்கொள்ளும்) திகம்பரர்களின் சித்தாந்தங்களை நசுக்கியவர்
529. भलि कश्चिदमनः — மல்லிகைகளைப் போன்ற வெண்ணிற பற்களை உடையவர்
530. भलिनामभयमः — பெண்களின் நினைப்பிலிருந்து மிகவும் விலகியவர்
531. कामभिरिः — காமத்தின் எதிரி வடிவானவர்
532. कुङ्कु — ஆநந்தமும் உத்ஸாஹமும் கொண்டவர்
533. कभीचगुणकरः — விரும்பத்தக்க குணங்கள் இருக்கும் சுரங்கம் போன்றவர்
534. भैरवः उदीक्षुभैरवैविभैरवः — (சந்த்ரனிலிருந்து உருவான) நர்மதா நதிக்கரையில் ப்ரஸந்நமான கோவிந்த (பகவத்பாதருக்கு) ஸேவை செய்தவர்
535. भलि कश्चिदमनः — மாலிகாப்ரியன் என்ற சாளுக்ய அரசனால் (கனகாபிஷேகாதிகளால்?) உடல் முழுதும் பூஜிக்கப்பட்டவர்
536. मृगम्भवरिष्ठः — (நான்கு) ஆச்ரமங்களை தாண்டிய நிலையை அடைந்தவர்களில் தலைசிறந்தவர்
537. श्रीः — (ஞானமாகிய நீங்காத) செல்வமாக (தாமே ஆனவர்)
538. मित्रकल्पायुः — அண்டியவர்களுக்கு கற்பக வருஷமானவர்
539. मृगम्भः — களைப்பற்றவர்
540. भद्रपुण्ड्रभय — காற்றினால் தூண்டப்பட்ட (அலைகள் கொண்ட நதிகளில்) ஸ்நானம் செய்தவர்
541. अष्टवक्त्रमनः — (காலடியில்) கும்பமுனியை தரிசித்தவர்
542. ध्वंविभृत्तगुमापुत्रुलमनः — தாமாகவே குனிந்து மரங்களின் நுனிக்கிளைகள் அர்ப்பணித்த பழங்களை உண்டவர்

543. वद्धस्तारुकेन्दुतीक्ष्णभारश्चभृगुः — பொழியும் மேகங்கள் கொட்டும் நீர்ப்பெருக்குடன் (கூடிய) பாதைகளில் (பாதிப்பின்றி) செல்பவர்
544. मधुसूदनसुवस्नाद्वृषीवीरनाम्नः — கொழுந்துவிட்டெரியும் காட்டுத்தீ (விலகி) அளித்த பாதையால் காட்டை அடைந்தவர்
545. मरुभृगुनिवृद्धभरणीवमुक्तिम् — ஹிம்ஸிக்கக்கூடிய மிருகங்கள் (தாமே) விலகியளித்த செல்லவேண்டிய பாதைகளில் ஸஞ்சரித்தவர்
546. मण्डुकुलपवनः — காற்றினால் எப்போதும் அனுகூலம் செய்யப்பட்டவர்
547. वमिष्ठः — (நீங்காத) செல்வம் உடையவர்களில் சிறந்தவர்
548. वायुतः — மௌனமாக இருப்பவர்
549. वरः — சிறந்தவர்
550. मभीरुवङ्गभृशुः — (செல்லும் பாதையில் அந்தந்த ஊர்மக்களின் வினையால் ஏற்பட்ட) அஸுப அடையாளங்கள் தாமே அடங்கப்பெற்றவர்
551. पंभुभृशुपश्वरः — தூசிகளற்ற (சுத்தமான) பாதைகளில் சென்றவர்
552. दुधारीमीकरभृक्षिष्ठपिष्टादनक्षिः — பனி (அல்லது நதி/மழை நீர்) தெறித்துபட்டதனால் மிருதுவான (சத்து) மாவை (மட்டும்) சாப்பிடுவதை வழக்கமாகக் கொண்டவர்
553. भकरपूरीभृभृपूरेतिः — மகரந்தத் (தேன்) வழிவது போல் மதிக்கத்தக்க இனிமையான சொற்கள் கொண்டவர்
554. भरुक्विः — பெரும் புலவர்
555. कभरुलुदरकेरीकुडकल्लैलिनीरः — அலைபுரளும் (நர்மதா) நீர்ப்பிரவாஹத்தை கமண்டலுவுக்குள்ளே அடக்கியவர்
556. मभृक्षुभृक्षिण्मुकाश्वीरपारभृतिः — (நீரில் இறங்கியும்) அழியாத திருநீறும் நனைந்த வஸ்திரத்தின் நுனிப்பகுதியில் மீன்களும் கூடியவர்
557. वैलाणभृदभृद्विः — எல்லைக் கரையில் ஸமுத்ரத்தை விரட்டியவர் (கதை தேட வேண்டும்)

558. भुवमङ्गीवनेश्वरः — இறந்தவர்களை உயிர்ப்பிக்கவல்ல பார்வையை உடையவர் (கோகர்ணத்தில் அவ்வாறு ஆசார்யாள் செய்ததாக சரித்ரம்)
559. भद्रवृषभमनः — பெரும் வியாதிகளை குணமாக்குபவர்
560. भद्रः — செருக்கை அழிப்பவர்
561. भगवमृता — மிருகங்களை தன்வசம் கொண்டவர்
562. एतद्वृक्षमिभुधी — ஜடம் கூன் உடையவர் முதலியோரிடமும் (கருணையுடன்) ஸம்பாஷித்தவர் (ஹஸ்தாமலகர் ஜடம் போல் காட்சியளித்தவர்)
563. लतापुष्पकुञ्जरः — கொடிகளிலிருந்து (தானாக உதிர்ந்த) பூக்களால் அர்ச்சனை செய்தவர்
564. भैवभिकक्षेत्रः — (காட்டுப்பகுதிகளில் ஸஞ்சரிக்கையில்) ஓநாய்க்கூட்டங்கள் முன்செல்லப்பெற்றவர்
565. भैषभभिकक्षेत्रः — (இரவில்) உறங்கவில்லையா என்று ஆந்தைகளால் கேட்கப்பெற்றவர்
566. भैष्णविककक्षेत्रः — (காலையில்) காக்கைகளால் ஸுப்ரபாதம் பாடப்பெற்றவர்
567. भैषभभिकपत्रः — (பாறைகள் முதலியவற்றிலிருந்து விலகி) செளகரியமாக அமர ஸர்ப்பங்களால் ஆஸனம் அளிக்கப்பட்டவர்
568. भैषगायनकुक्षेत्रः — (மழைக்காலத்தில்) இனிய பாடகர்களின் கோஷ்டியை உருவாக்கும் தவளைகளால் (உபசரிக்கப்பட்டவர்)
569. भैवडिष्टकपुष्पलिण — தேனீக்களால் (தேனாகிய மதுபர்க்கம் அளித்து) அதிதி உபசாரம் செய்யப்பட்டவர்
570. भैष्णविकमालः — புலிகளால் வரவேற்பு சொல்லப்பெற்றவர்
571. भैषिष्टिकवृक्षिकः — (பாறை முதலியவற்றிலிருந்து எழுந்துகொள்ளும்போது அப்பால் சென்று விழுவதால்) தேள்களால் சரியாக உதறிக்கொண்டீரா என்று நிம்சயம் செய்விக்கப்பட்டவர்
572. भैष्णविकपुष्पः — நீர்வீழ்ச்சிகளில் நன்கு நீராடியவர்

573. भैवहृङ्गनिकाभृङ्गः — மேகங்களால் எண்ணெய் தேய்த்துக்கொள்வது போல் (உடலைப் பளபளக்கவைக்கும் மழை) பொழிவிக்கப்பட்டவர்
574. भैवीण्डिकवाङ्मलः — பெருங்காற்றுகளால் நன்று விசிறிவிடப்பட்டவர்
575. भैवनाउपिकम्भः — மரங்களால் வெயிலிலிருந்து நன்கு பார்த்துக்கொள்ளப்பட்டவர்
576. भैवभित्तिकपञ्चामृः — ஸிம்ஹங்களைப் போல் (கம்பீரமாக) அமர்பவர்
577. भैवभूमिकवाङ्मलः — மலைப்பாம்புகளைப் போல் (ஒரு முறை) போதுமான அளவு உண்டு (வெகு காலம் த்ருப்தியுடன்) இருப்பவர்
578. भैविराभिकभङ्गः — மதம்பிடித்த யானைகளானைய அழகிய புன்முறுவல் உடையவர்
579. भैवपृथिविकङ्कः — குறைகளில் ஸுகமாக தங்கியவர்
580. भैवपृथिविकवाङ्मलः — (ஆங்காங்கு) எளிதில் கிளம்பி போவதற்கு பெருங்காட்டினால் (நல்ல பாதை அளிக்கப்பட்டவர்)
581. भैवभूमिकभैकलः — காக்கைகளால் சுப சகுனமாக கரையப்பெற்றவர்
582. भैवपृथिवிகवैमलः — குளங்களில் த்ருப்தியாக நீர் பருகியவர்
583. भैवपृथिविकवैमलः — பழுத்த மரங்களினால் நன்கு உண்டவர்
584. भैविलिपिकवैमलः — பூமி தூசி (உடல்முழுதும் சந்தனம்போல்) நன்கு பூசப்பெற்றவர்
585. भैवभूमिकपञ्चामृः — கந்தராடையை உயர்ந்த வஸ்த்ரம் போல் தரிப்பவர்
586. भैवपृथिवிகवैमलः — ஜபங்கள் நன்கு நடக்கின்றனவா என்று (விசாரிப்பதுபோல் இடையூறு செய்யாமல்) கரடிகள் அப்பால் செல்லப்பெற்றவர்
587. भैवपृथिवிகवाङ्मलः — சாதக (பறவைகள் குரல் கொடுப்பதால்) பாராட்டப்பட்ட (உபநிஷத் முதலிய) உயர்ந்த பாராயணம் செய்தவர்
588. भैवभूमிகवैमलः — நன்கு உறங்கினீர்களா என்று குரங்குகளால் (வந்து விசாரிக்கப்பட்டவர்)
589. भैवपृथिवிகवैमलः — அழகிய பாட்டுகளால் குயில்களால் போற்றப்பட்டவர்

- 76

607. षण्णः — வடிவழகு குன்றாதவர்
608. ऋक्सांसिनीरपभुपितृचैन्मोषः — பதினோரு முறை ருத்ரம் ஜபம் செய்வித்து பிறைசூடிக்கு அபிஷேகம் செய்வித்தவர்
609. निन्नः — (தற்) பெருமையற்றவர்
610. तृभुक्क्षैः — (உலகச்) செயல்களாகிய ப்ரவாஹத்தை விடுத்தவர்
611. निःस्वभरतः — ஒப்பில்லா ஆனந்தத்தில் எப்போதும் திளைத்திருப்பவர்
612. मरतिः — (லௌகிக) ஸுகத்தை நிராகரித்தவர்
613. निरतुः — முடிவில்லாதவர்
614. नीरुणः — வலியற்றவர்
615. मनीरुः — (தனக்கென தனி) இடம் வைத்துக்கொள்ளாதவர்
616. निवभर्णपुत्रः — பலவித கட்டுப்பாடுகளை திறம்பட நிர்வகிப்பவர்
617. निगुभुमउनिर्दुहनिर्दुह्मैउपमृतिः — நூற்றுக்கணக்கான குழாம்களுக்கு குற்றமற்ற அத்வைத பாதையைக் காட்டியவர்
618. मङ्गपमारीरककुञ्जवृद्धादिउभनः — ஸங்க்ஷேப ஸாரீரகம் செய்த ஸர்வஜ்ஞாத்மாவுக்கு (தமக்கு பிறகு காஞ்சீ காமகோடி பீட) ஆஸனத்தை அளித்தவர்
619. त्रैक्षुभिस्त्रिस्त्रिक्त्रैस्त्रैस्त्रैः — நைஷ்கர்ம ஸித்தியை செய்தவரும் வார்த்திகத்தை செய்தவருமான ஸுரேஸ்வரரை (ஸர்வஜ்ஞாத்மாவுக்கு முன்) அடுத்தவராக்கியவர்
620. त्रिष्टुपिपुपुपुपुपुपुपुपु — எரிந்துபோன உரையின் ஐந்து பாதங்களை ஒப்பித்து பத்மபாதரை சந்தோஷப்படுத்தியவர்
621. रुभुभलकिउपुद्रुभुभलकंभकः — ஆத்ம தத்துவத்தை உள்ளங்கை நெல்லிக்கனி போல் கொண்ட ஹஸ்தாமலகருக்கு துறவறமளித்தவர்
622. मरुभननृगिरिउरकपुकरगुणीः — மிகவும் சுமாரான (திறம்கொண்டிருந்த) ஆநந்தகிரி (என்ற சீடர்) தோடகம் (எனும் யாப்பில் குருவைத் துதித்து

623. णिङ्गुणामादङ्गुणामादविष्टपिङ्गुम्भः — சித்ஸுகாசார்யரால் இயற்றப்பட்ட தன் சரிதையால் விளக்கப்பட்ட ஆஸ்ரம (நிஷ்டையை) உடையவர்
624. उपदिमभरुभृदिपुषिउपकण्डयः — உபதேஸ ஸாஹஸ்ரீ முதலிய (நூல்களால்) பரவலாக (பலரும் பயன்பெற) அத்வைதத்தை விளக்கியவர்
625. मुभ्रायभृकनिर्मुह — (ஞான மார்க்கத்திற்கு ஸாதனமான) எட்டு ஆம்னாயங்களுக்கு வழிகாட்டி
626. भपृभाभ्रावनिष्ठितः — மத்யம (நடு) ஆம்னாயத்தில் (தானே முதல் பீடாதிபதியாக) நிலைத்தவர்
627. विष्णुभृन्मायभृउषागउपषागउः — (இந்த ஆம்னாயங்கள்) வளருவதால் (நாஸ்திகராகிய) புத்த மதத்தினவரை த்வம்ஸம் செய்தவர்
628. श्वरकभन्निष्ठित — (முதல் ஆம்னாயத்திற்கு) துவாரகா மடத்தை நிர்மாணித்தவர்
629. कालिकापीङ्कलकः — காளிகா(வை ஆம்னாய ஸக்தியாகக் கொண்ட) பீடத்தை உருவாக்கியவர்
630. भिक्षुश्वरभपण्डित — (ஆம்னாய ஈஸ்வரராக) ஸித்தேஸ்வரரை வழிபட்டவர்
631. रुद्रकलीपुमानः — (ஆம்னாய ஸக்தியான) பத்ரகாளியை சந்தோஷப்படுத்தியவர்
632. कर्षेणः — (ஆம்னாய வேதமான) ஸாமவேதத்தை ஓதியவர்
633. कीर्णवामुः — பூச்சிகளை இம்சிக்காமல் இருக்கும் (ஆம்னாய) விரதம் கொண்டவர்
634. गैभरीरीरुमेवः — கோமதீ (என்னும் நதியை ஆம்னாய) தீர்த்தமாக சேவித்தவர்
635. ध्रुपध्रुणामादपद्मपानिदिमकुश — (ப்ரஹ்ம) ஸ்வரூபர் என்ற ப்ரஹ்மசாரிக்கு ஆசானான பத்மபாதருக்கு வழிகாட்டியவர்
636. मुम्भी — (இந்த ஆம்னாயத்திற்கு தஸநாமிகளில்) ஆஸ்ரம எனும் பட்டம் அளித்தவர்

637. उद्धमभृमिभरुवकुडुरुपवना — (ஸாமவேதத்தின்) தத்த்வமஸி (என்பதை) முதலாகக் கொண்டு (உபதேசித்த) மஹா வாக்கிய வடிவானவர்
638. ऐडिङ्करः — (இரண்டாம் ஆம்னாயத்திற்கு) ஜ்யோதிர் மடத்தை நிறுவியவர்
639. ऐडिङ्गीपींनिमकुडा — ஜ்யோதிஷ்மதீ பீடத்துக்கு வழிகாட்டியவர்
640. गण्डमभंभुनः — பதரிகாஸ்ரமத்தை இருப்பிடமாகக் கொண்டவர்
641. मलकनगुवगारुनः — அலகாநந்தாவில் நீராடியவர்
642. मुषवक्त्रिरेवैदी — அதர்வாங்கிரஸ வேதத்தை அறிந்தவர்
643. मीपुल्लगिरिमैवकः — ஸ்ரீ பூர்ணாகிரி (எனும் தேவியை) சேவித்தவர்
644. गैवत्तनभीनषः — (மூன்றாவது ஆம்னாயத்திற்கான) கோவர்த்தன மடத்தின் தலைவர்
645. गिरिवैगपएम्यः — (தஸநாமிகளுள்) கிரி என்ற யோகபட்டத்தை (சில ஸிஷ்யர்களுக்கு) ஆஸ்ரயித்தவர்
646. पुषेडुभमङ्करी — புருஷோத்தமரின் நல்ல க்ஷேத்ரத்தில் இருந்தவர்
647. विमलापींकलकः — விமலா பீடத்தை முறைப்படுத்தியவர்
648. मउनगुः — (உலகாயத ஆனந்தத்தை விட) நூறு நூறு மடங்கு ஆனந்தம் கொண்டதாக (உபநிஷத்தில் வர்ணிக்கப்பட்டவர்)
649. मउेरः — (அவ்வாறே) நூறு நூறு மடங்கு ஸக்திகளையும் கொண்டவர்
650. एमेन्वियविनिर्गुः — பத்து இந்திரியங்களையும் அடக்கியவர்
651. मीडुन्लिउममीमृमङ्गगिरिम्यी — (நான்காவது ஆம்னாயத்திற்கு) அழகு கொழிக்கும் தேஸமாகிய ரும்யஸ்ருங்க கிரியில் தங்கியவர்
652. मारणवमनापुउवृपुपींणिरैरुः — வ்யாக்யான பீடத்தில் அமரும்படி ஸாரதையின் வாக்கினால் அருளப்பட்டவர்
653. रामगुपुर्बेरी — ராமசந்த்ரபுரம் என்ற க்ஷேத்ரத்தில் வசித்தவர்
654. उङ्गरुउएम्भी — துங்கையும் பத்ரையும் (கூடுமிடத்தின்) தடத்தில் ஆஸ்ரமம் அமைத்தவர்

655. वरारुद्रेश्वरभारमरुद्रयमत्रिरुद्रा — वराहुरै தேவனாகவும் ஸாரதையை ஸக்தியாகவும் கொண்டவர்
656. रुद्रिचारी — மிகுதியான (செல்வச்செழிப்பைத்) தவிர்ப்பதை (வ்ரதமாகக் கொண்டவர்)
657. रुद्रयज्ञेय — க்ருஷ்ண யஜுர் வேதத்தை பயின்றவர்
658. श्रीरुद्रपदः — பெருமைக்குரிய பாரதி எனும் பட்டத்தை (ஸிஷ்யர்களுக்கு அளித்தவர்)
659. विष्णुकाष्ठान्मूलनिकरैर्मदका — விபண்டக முனிவரின் இருப்பிடத்தில் உள்ள மலஹானிகரேஸரை தரிசித்தவர்
660. विष्णुभक्तैवभूरीयपदम्यः — (அதே கர்ணாடகத்தில் ஹம்பியில்) விஸ்ருபாக்ஷ (க்ஷேத்ரத்தில் உள்ள) மஹாதேவரின் உயர்ந்த கோவிலை ஆம்ரயித்தவர்
661. भरीभिर्भूलीभानुभैलाभयभक्तगुरुः — பண்டிதருலகு மதிக்கத்தக்க (ஐந்தாவது) மூல ஆம்னாயத்தின் (ஸ்தாபகரான) மஹாகுருவானவர்
662. प्रपृष्टीष्टावाष्टैर्मीष्टाभयान्भिमैसिकः — கிழக்கு, மேற்கு, தெற்கு, வடக்கு (ஆகிய மற்ற) ஆம்னாயங்களுக்கு முதல் ஆசானாகக் கருதப்படுபவர்
663. प्रपृष्टाभयविष्टुष्टुभूमलकम्पुः — கிழக்கு ஆம்னாயத்தில் வைக்கப்பட்ட ஹஸ்தாமலகரால் நன்கு வணங்கப்பட்டவர்
664. प्रीष्टाभयभक्तैसन्नविष्टुभक्तः — மேற்கு ஆம்னாயத்திற்கு உத்தரவிடப்பட்டதால் (பத்மபாதர் எனும்) சனந்தனரை சந்தோஷித்தவர்
665. श्वपृष्टाभयनिष्ठपुष्पिणरुद्राक्षिकः — தெற்கு ஆம்னாயத்தில் வைக்கப்பட்ட ப்ருத்வீதவரால் வணங்கப்பட்ட திருவடியினர்
666. उष्टीष्टाभयरुद्राक्षिकः — வடக்கு ஆம்னாயத்தில் ஏற்படும் ஆனந்தத்துடன் ஆனந்தகிரியால் வணங்கப்பட்டவர்
667. कामकेपीपीपतिः — காமகோடி பீடத்தின் அதிபதி
668. कभ्रवेगवतीपः — கம்பா வேகவதீ நதிகளுக்கு இடையில் சஞ்சரித்தவர்

669. एकभूषणमभूषणमभूषणः — ஏகாம்ரநாதரின் திருவடித்தாமரைகளை (மொய்க்கும்) தேனீ போன்றவர்
670. कामाक्षीमभूषणमभूषणः — காமாக்ஷியின் இரு திருவடி பாதுகைகளையும் அர்ச்சிப்பதில் ஈடுபாடுடையவர்
671. एकैश्वर — ருக் வேத சொரூபமானவர்
672. परब्रह्मवभूषणमभूषणः — பர ப்ரம்ஹத்தை (ஸாஸ்த்ரப்படி) நிறுவுவதில் பராக்ரமம் காட்டிய புத்தியுடையவர்
673. भद्रवभूषणमभूषणः — ஸத்யவ்ரதம் எனப்படும் காஞ்சியில் (இறுதியில்) தன் உடலை மறைத்தவர்
674. भवःपीठमभूषणमभूषणः — ஸர்வஜ்ஞ பீடம் ஏறியதால் “இவர் அனைத்தையும் அறிந்தவரா?” என்ற ஐயத்தைத் தொலைத்தவர்
675. भृगुमभूषणमभूषणः — ஸுரேஸ்வரர் முதலிய நல்மாணாக்கர்கள் வணங்கிய பாதுகையை உடையவர்
676. भीमभूषणमभूषणः — (பூர்வம் உத்தரம் ஆகிய) இரு மீமாம்ஸைகளில் கரைகண்டவர்
677. कामरूपमभूषणमभूषणः — வைஸேஷிகம் ந்யாயம் இரண்டின் பாதையையும் அறிந்தவர்
678. स्वर्णमभूषणमभूषणः — முப்பத்திரண்டு வயதிற்குள் மும்முறை பூமியை (பாரதத்தை) ப்ரதக்ஷிணம் செய்தவர்
679. सुमेधमभूषणमभूषणः — சேது முதல் இமாலயம் வரை தர்மத்தை நிலைநிறுத்திய ஆசிரியர்
680. विष्णुमभूषणमभूषणः — தம் வித்யையால் பரவசமான அனைத்து தேசத்து அறிஞர்களாலும் பூஜிக்கப்பட்டவர்
681. एकैश्वर — உலகிற்கே குரு
682. एकैश्वर — (ஈசனார் வடிவில்) உலகின் பிறப்பு (இருப்பு மறைவுகளுக்கு) இடமானவர்

683. मभूयैनिः — (ஈசனார் வடிவில்) ஸாஸ்த்ரங்களின் பிறப்பிடம்
684. मभवृषी — (முரணாகத் தோன்றும் வேதாந்த வாக்யங்களை) ஒருங்கிணைத்தவர்
685. मृक्षमृक्षद्वलिङ्गी — தெளிவாகவும் தெளிவின்றியும் பரம்பொருளைக் குறிப்பவற்றை (அறிந்தவர்)
686. मा हृद्यैगविभमकुडा — ஸாங்க்ய யோக (ஸாஸ்த்ரங்களை) பரிசீலித்தவர்
687. वैशकरणीमेणी — இலக்கணம் கூறுபவர்களின் கருத்தை பரிசோதித்தவர்
688. वमिष्ठः — வசிஷ்டர் (போல் பிறரின் தாக்குதலை எளிதில் சமாளித்தவர்)
689. ककुम्भुरः — (பரம்பொருள் வடிவில்) விண்ணை ஆடையாக கொண்டவர்
690. गैउभीववगैभृप्ति — ந்யாய ஸாஸ்த்ரத்தின் (குறைகொண்ட) வாதங்களை முடக்கியவர்
691. वैमैधिकमदपरुः — வைசேஷிகர்களின் கருவத்தை அடக்கியவர்
692. मेद्वेदनिभद्विङ्गप्ति — புத்த மதத்தினரின் செருக்கை சீர்குலைத்தவர்
693. लैभिनीवकुद्विङ्गुडा — ஜைமினீயத்தின் குறுகிய பார்வையை முறியடித்தவர்
694. दिगभूरवववृषः — திகம்பரர்கள் கொண்டு வந்த கடைசி வாதங்களையும் அழித்தவர்
695. श्वभुपासुपउत्थिः — பாசுபதர்களின் செயல்பாடுகளை சிதறடித்தவர்
696. मुद्राङ्गवद्विङ्गुडा — ஆத்மா (இல்லை, அனைத்தும்) சூன்யமே என்னும் வாதத்தை வீழ்த்தியவர்
697. वित्रुङ्गवउगभः — (ஸங்கர்ஷணன் முதலிய நான்கு வடிவங்களே இறைவனின் உண்மை வடிவம் என்ற) பாகவத மதத்தை வென்றவர்
698. विवैद्विनिमिउपेद्विङ्गुयगभीरवपृकुडा — வலுத்த ந்யாயங்களால் கம்பீரமாகவுள்ள பாஷ்யத்தை விளையாட்டாக இயற்றியவர்
699. वृष्टाउसीवगविउः — ஜீவனின் சரிதத்தை விளக்கியவர்
700. विम्वमृष्टिविमरदः — பிரபஞ்சத்தின் தோற்றத்தை கற்றுணர்ந்தவர்

701. भ्रुडिभीभाविष्ठागः — இருப்பின் எல்லைகளை பாகுபடுத்த தெரிந்தவர்
702. प्लयाङ्गुपुष्पकः — பிரளயத்தின் பொருளை தெளிவாக்கியவர்
703. मंभारउड्मभृवावा — சம்சாரத்தின் தத்துவத்தை அலசியவர்
704. भावाउड्मिपुपः — மாயா தத்துவத்தை நிரூபணம் செய்தவர்
705. मभलाविष्ठापृरेपेन्मलनविमः — அவித்யையால் ஏற்பட்ட பிரமையை அதன் காரணத்துடன் வேரறுப்பதில் வல்லுநர்
706. मंभारउरपयमपुमनपरिपुवाका — ஸம்ஸாரத்தைத் தாண்டும் வழியைக் காட்டுவதில் மிகவும் திறமுள்ள வாக்கினர்
707. रमिका न्नादएकभनवातुमभृडिः — (அத்வைத) ரஸிகர்களுக்கு உவகையளிக்கும்படி மஹாவாக்யங்களை செம்மையுற விளக்கியவர்
708. वृनिपुणनभरुमउल्लेकीभनकविः — உள்ளர்த்தத்தை முக்கியமாகக் கொண்ட அமருக ஸத ம்லோகி என்ற நூலை இயற்றியவர்
709. रूद्रभउरूद्रमिपागीउपभूनरुपृकुडा — ப்ரஹ்ம ஸூத்ரம், உபநிஷதம், கீதை ஆகிய ப்ரஸ்தானங்களுக்கு விரிவுரை எழுதியவர்
710. पुड्मूद्रैकुंणवृमसी — உள்ளிருக்கும் பிரமத்துடன் ஐக்கியம் பெறும் வழியைக் காட்டியவர்
711. भैरवृमः — மோக்ஷத்தின் பாதையைக் காட்டியவர்
712. निरउरकुडभयमिरेनिगमसीलनः — எப்போதும் உபநிஷதங்களின் சொற்றொடர்களையே சிந்தித்து வந்தவர்
713. वेदउवनरुदः — வேதாந்தமெனும் அரண்யத்தில் ஸிம்ஹம் போன்றவர்
714. उड्मनभदेरिः — தத்துவ ஞானத்தில் பரந்த சமுத்திரமனையவர்
715. उः — இளைஞர்
716. उः — (ஆனால்) இளம் பெண்களிடம் ஈடுபாடில்லாதவர்
717. उरपडिभभृविः — சந்த்ரனைப் போன்ற பொலிவுடையவர்

718. उरकरुद्धः — கடை தேற்றும் பிரம்ம தத்துவத்தை அறிந்தவர்
719. उपधी — தவமியற்றியவர்
720. उपभृगः — தவசிகளைப் பின்பற்றுபவர் (அல்லது) தவசிகளான சீடர்களை உடையவர்
721. उपयविभृगुः — (உடல், இயற்கை, பிராணிகள் ஆகிய) மூன்றாலும் ஏற்படும் இன்னல்கள் அற்றவர்
722. नलिनेतिरामगु — மிருதுவான சொற்களால் (மாற்றுக்கருத்துகளை) நிராகரித்தவர்
723. मलङ्गी — (மனவடக்கம் மற்றும் புலனடக்கம் ஆகிய) அலங்காரங்களைக் கொண்டவர்
724. मडिभृमीः — (உலக ரீதியில்) மிகவும் மதிக்கத்தக்கவர்களால் நாடப்பட்டவர்
725. मङ्गविग — (தன் சொருபமாகிய) ஆத்மாவை (உலகின் காரணமான ப்ரஹ்மமாக) அறிந்தவர்
726. रङ्गविभृगः — ப்ரஹ்மமாகிய (உலகின் காரணத்தை தன் சொருபமான ஆத்மாவாக) உணர்ந்தவர்களுள் சிறந்தவர்
727. रङ्गः — வேதத்திற்கு ஹிதமானவர்
728. रङ्गुः — தாமே ப்ரஹ்மமாக ஆனவர்
729. भृगुनसिउकसिगः — தனது இருப்பிடமாக விரும்பிய (மதிக்கத்தக்க) காஞ்சியிலேயே நிலைத்தவர்
730. कुपुष्टुलीयः — புண்ணிய தலங்களுக்கு யாத்திரை செய்தவர்
731. कुभृयउड्विग — (ஆறாவது) ஊர்தவ (மேலான) ஆம்னாயத்தின் தத்துவப் பொருளை உணர்ந்தவர்
732. कैवल्वविष्णी — (தானொன்றே இருப்பதாகிய) கைவல்யமெனும் க்ஷேத்ரத்திற்கு விஜயம் செய்தவர்
733. मुभृगमडीकः — சுத்தமான மனதையே தீர்த்தமாகக் கொண்டவர்

734. भुभेभुलभङ्गरी — (உலகிற்கு உச்சியான) மேருவின் அடியை (மடமாகக் கொண்டு) ஸஞ்சரித்தவர்
735. भावमक्तिविश्वः — மாயையை (பீடத்தின்) ஸக்தியாக பூஜித்தவர்
736. भद्रनादिशङ्करी — (இந்தர ஸரஸ்வதி முதலிய பட்டங்களுக்கு பதில்) ஸத்யம் ஞானம் என்ற பெயர்களாலேயே அழைக்கத்தக்கவர்
737. भावभूतभक्तिभावा — இடையறாத ஆனந்த மூர்த்தியானவர்
738. भैरविवैश्वाम्भुः — ஸோஹம் (அதாவது) சிவனே நான் என்பதை (மஹா)வாக்யமான செல்வமாகக் கொண்டவர்
739. भद्राभावैश्वः — (ஏழாவது) உள்ளிருக்கும் ஆம்னாயத்தை அறிந்தவர்
740. निरञ्जयेश्वरमेवी — (ஸம்ஸார) தோஷங்களற்ற ஈஸ்வரனை வழிபடுபவர்
741. श्रीकरः — செல்வத்தை உண்டு செய்பவர்
742. भद्राशङ्करी — சம்பிரதாயங்களை (வகுத்தளித்தமையால்) தாங்கியவர்
743. विष्टपी०भङ्गवैगी — வித்யையை (ஸக்தியாகக் கொண்ட) பீடத்தின் மஹா யோகி
744. परमाङ्गभाम्भुः — பரமாத்மாவையே (பீடத்தின்) மடமாக ஆஸ்ரயித்தவர்
745. त्रिपुरीतीक्ष्णविरुडिः — (அறிவு அறிபவன் அறியப்படுவது என்னும்) த்ரிபுடியே (பீடத்தின்) தீர்த்தமாகக் கொண்டு அதில் நீராடியவர்
746. वैश्वेश्वरिणः — யோகத்தையே (பீடத்தின்) க்ஷேத்ரமாகக் (கொண்டு அதனை ப்ரகாஸிக்க வைக்கும்) ஸூர்யனானவர்
747. श्रीविष्टमक्तिपः — ஸ்ரீவித்யையை (பீடத்தின்) ஸக்தியாகக் (கொண்டு) ஜபத்தினால் (உபாஸித்தவர்)
748. भङ्गी — மந்த்ரங்களின் (இருப்பிடமானவர்)
749. भङ्गैश्वरी — (தன்னில்) சந்தோஷித்து இருப்பதையே ஸம்ப்ரதாயமாகக் கொண்டவர்

750. परम्परिष्ठा — பரமஹம்ஸ (நிலையையே ஈஸ்வர ஸ்வரூபமாகக் கொண்ட அத்தகைய நான்காம் நிலையிலுள்ள) ஸந்ந்யாஸி
751. मीमिक्षापूर्वप्रदृष्ट — பொலிவுடன் தன்னில் நிலைபெற்ற ப்ரஹ்மசர்யத்தைக் கொண்டவர்
752. भाङ्कैकभन्वाङ्कः — (ஐம்பது) மாத்ருகா வர்ணங்களையும் ஒரே மஹாவாக்ய வடிவில் (பார்ப்பவர்)
753. वैदुः — உடலைப் பார்க்கும் ஸாக்ஷி சைதந்ய வடிவமான (ஆம்னாய பீடாதிபதியானவர்)
754. मरुतः परः — (உலகில்) அழியாதவை (என்று ப்ரஸித்தமானவற்றைக்) காட்டிலும் பெரியவர்
755. निष्कलभयनिरुः — (எட்டாவது) நிஷ்கல ஆம்னாயத்தில் நிலைபெற்றவர்
756. मन्त्रिप्रियुः — சாந்தமும் பொறுமையும் உடையவர்
757. मित्रिः — சைதன்யத்தையே (சக்தியாகக் கொண்டவர்)
758. मन्त्रुपीम्बिः — ஆனந்த பீடத்தில் உறைந்தவர்
759. मन्त्रुपिपम्बः — சுய அனுபவமே கேஷத்ரமாகக் கொண்டவர்
760. मन्त्रुपिपिपिः — (ஸாஸ்த்ரத்தில்) நம்பிக்கையாலும் (மற்றவர்களிடத்தில்) நட்பாலும் அறியத்தக்க (சொருபத்தினர்)
761. मन्त्रुपिपिपिः — ஸச்சித் (ஸ்வரூபமே) மடமாகக் கொண்டவர்
762. मन्त्रुपिः — ஆகாயமே தீர்த்தமாகக் கொண்டவர்
763. मन्त्रुपि — ஆகாயம் (போன்று ஸூக்ஷ்மமாக உள்ள பரம்பொருளைப்) பார்த்தவர்
764. मन्त्रुः — ஆகாயம் (முதலிய சொற்களால் உபநிஷத்துகளில் சொல்லப்பட்ட பரம்பொருளானவர்)
765. मित्रुपिपिः — சைதன்யம் மற்றும் அதன் ஸக்தி இவற்றை சிந்திப்பவர்
766. मन्त्रुपि — ப்ரணவத்தில் அமிழ்ந்தவர்

767. ऋषी — (தமது குருமார்கள் விஷயத்தில்) வணங்கிய (உடலுறுப்புகளைக்) கொண்டவர்
768. ऋषैपुण्ड्रः — நந்த கோப குமாரனை பூஜித்தவர்
769. रुभा — (தன்னைக் காட்டிலும் பெரியது இல்லாத) பெரும்பொருளானவர்
770. रक्षावृक्षम् — பிரமானந்தம் என்ற பெயர் கொண்ட (ஸ்வரூபத்தினர்)
771. रुद्रः — (ஸாக்ஷி ஸ்வரூபமாக) மாறாமல் உள்ளுறைபவர்
772. मरुतः — அழிவில்லாதவர்
773. रुद्रः — (பக்தர்களின்) விருப்பத்தை நிறைவேற்றுபவர்
774. पराङ्मुखाङ्गः — உள்ளும் வெளியும் தனித்தனியாக இல்லாதவர்
775. मकलङ्ग — அனைத்திலும் உயிராக உறைபவர்
776. मकलः — பகுதிகளற்றவர்
777. पुरुः — (மாயையால்) பல (வடிவமாகத் தோன்றுபவர்)
778. पुरुषः — ஸரீரத்தில் வீற்றிருக்கும் (ஆத்ம ஸ்வரூபமானவர்)
779. पुष्पः — ஸம்ருத்தியுடையவர்
780. पूरुः — நிறைவானவர்
781. मङ्गमाङ्गः — இருப்பாக இருப்பவர்
782. पूरुतः — பழமை காலமுதலே இருப்பவர்
783. रैगैगी — நுகர்வை (ஸத்விஷயத்தில் கட்டுப்படுத்தும்) யோகத்தை அளிப்பவர்
784. रैगरैगी — யோகத்தையே தன் நுகரும் பொருளாக ஆக்கியவர்
785. रुवमाङ्ग — உலகங்களில் உள்ளுறைபவர்
786. वनेपः — (விரும்பத்தக்க ஒரே பொருளாகையால்) வனம் (எனப்படும்) ப்ரஹ்மத்தில் ஸஞ்சரிப்பவர்)

787. रुडिक्ता — (ஸ்த்கார்யங்களை செய்வதற்கு வேண்டிய) செல்வத்தை உருவாக்குபவர்
788. रुडिः — (அத்தகைய) செல்வத்தை (அத்தகைய காரியங்களுக்காக நமக்கு) தருபவர்
789. रुः — எங்கும் வ்யாபித்திருப்பவர்
790. रुमः — (பக்தர்களுக்கு அருள) பலவிடங்களில் உறைபவர்
791. रुक्वकः — இறைவனின் ஸ்ருஷ்டியை ரசிப்பவர்
792. रुक्ता — (உலகத்திற்கு க்ஷேமம் ஏற்படும் வகையில் காஞ்சீபுரத்தில்) ஸ்ரீசக்ரத்தை ஸ்தாபித்தவர்
793. रुक्ताक्षपुत्रः — (அங்கு) ஸ்ரீசக்ர பூஜை அர்ச்சனை சம்பிரதாயத்தை செயல்படுத்தியவர்
794. रुक्मिण्युता — பாம்புகளை அணிகலன்களாக்கிக் கொண்ட (சிவனார்) வடிவினர்
795. रुक्मिणिदेवः — (சிவனார் வடிவில்) விஷ்ணுவினால் ஸேவிக்கப்பட்டவர்
796. रुक्मिण्युता — சக்ரவர்த்திகளின் தலையணிகளில் அங்கமான நககாந்தியைக் கொண்டவர்
797. रुक्मिणीकुम्भारः — ஏழை அந்தண பெண்மணியின் வீட்டில் உள்ள (மண்) கலயங்கள் அனைத்தும் தங்கமாக்கியவர்
798. रुक्मिणीकुम्भारः — (யுக்தியால்) சாதுர்யமிக்கதும் (கருணையால்) பெருந்தன்மை மிக்கதும் (பொருளினால்) கம்பீரம் மிக்கதுமான வாக்யங்களால் வாதம் செய்பவர்
799. रुक्मः — பயணித்துக்கொண்டே இருப்பவர்
800. रुक्मः — பிறைகுடி வடிவினர்
801. रुक्मिण्युता — சம்பங்கி (மொட்டை) விட (அழகிய) மூக்கை உடையவர்
802. रुक्मिण्युता — பூமியெங்கும் ஸஞ்சரிக்கும் பலவித மதங்களை மிச்சமின்றி விசாரித்து (பதிலளித்தவர்)

803. मालिङ्गैविल्लनः — அத்வைத ஞானத்தை (எங்கும்) ப்ரச்சாரம் செய்தவர்
804. मरः — (பக்தர்களுக்கு அருள ஆங்காங்கு) ஸஞ்சரித்துக்கொண்டே இருப்பவர்
805. मिश्री — பலவித (திறன்கள்) கொண்டவர்
806. मन्दभूतः — சிதாகாஸ வடிவினர்
807. मीरुभट्टभूतमिरुभूतभूतः — ஸத்யவ்ரத ஸ்தானம் (எனும் காஞ்சியில்) சுகமாக வெகுகாலம் தங்கியவர்
808. मल्लिङ्गैविल्लनः — மாணவர்களின் ஹ்ருதயத்தில் இருக்கும் சிக்கல்களை சூர்ணமாக்கியவர்
809. मरुभूतभूतभूतः — துஷ்டர்களின் வாய்களை மண்ணைக் கவ்வச் செய்பவர்
810. पृथिवीपकः — ஸ்தாபனங்கள் ஏற்படுத்தியவர்களில் தலைச்சிறந்தவர்
811. पृथिवीभूतः — பெரும் புகழை நிலைநிறுத்தியவர்
812. पृथिवीभूतभूतभूतः — பெரிய (பௌத்தர்களான) விஞ்ஞானவாதிகளின் கர்வத்தை முழுவதும் தேய்ப்பதற்காக வந்தவர்
813. पृथिवीभूतभूतभूतः — பூமியில் இருப்போர்கள் அனைவருக்கும் (நித்ய) மகிழ்ச்சியை (அளிக்கவல்ல நன்மையை உபதேசித்தவர்)
814. यद्विभूतभूतभूतः — துறவிகளுக்கான தர்மத்தை ஆராய்ந்தவர்/நேராக காட்டியவர்
815. यद्विभूतभूतभूतः — ஆன்மிகத்தின் உண்மையைக் காட்டியவர்
816. मुनीभूतभूतभूतः — அறிஞர் கூட்டத்தால் நாடப்பட்டவர்
817. मनीषभूतभूतभूतः — நதி, நதம், ஏரி (முதலான) நீர்நிலைகளில் முங்கி நீராடி தூய்மை பெற்ற உடலினர் (உண்மையில் அவற்றை தூய்மைப்படுத்தியவர்)

818. पण्डितपुत्रपण्डितपुत्रपण्डितः — (கர்வமுள்ள) பண்டிதர்கள் கூட்டத்தின் பாண்டித்யத்தை கவ்வவல்ல சொற்கள் கொண்டவர்
819. उद्धारपुत्रः — தத் பதத்தின் பொருளை பிரகடனப்படுத்தியவர்
820. उद्धारविवेकज्ञ — த்வம் பதத்தின் பொருளை விளங்கச் செய்பவர்
821. निष्ठातृ — எப்போதும் ஆனந்தமாக இருப்பவர்
822. निरालम्बः — (சுதந்திரமாய்) எதையும் சாராமல் இருப்பவர்
823. निरक्षः — புலன்களுக்கு அப்பாற்பட்டவர்
824. निरिपलैश्चकः — எல்லாவற்றையும் (ஸாக்ஷி பாவத்துடன்) பார்ப்பவர்
825. निरुणीः — அழிவற்ற ஞானம் உடையவர்
826. निरुमङ्गलः — நித்யத்தையே (அடைய வேண்டும் என்ற) ஸங்கல்பம் கொண்டவர்
827. निरिभुः — (மோக்ஷம் எனும்) பொக்கிஷத்தில் நின்றவர்
828. निरविमृकः — அவித்யை அற்றவர்
829. निरुवाभी — நித்யமாகிய (பரம்பொருளில்) வசிப்பவர்
830. निरुमुनिः — எப்போதும் தூய்மையாக இருப்பவர்
831. निरुशः — பேராசை இல்லாதவர்
832. निरभारिण — வேத விரோதிகளை ஒழிப்பவர்
833. निरङ्गः — (ஸம்ஸார) தோஷங்கள் அற்றவர்
834. निरुपण्डः — எப்போதும் வணங்கத்தக்கவர்
835. निरुभुतः — எப்போதும் விடுதலையானவர் (ஸம்ஸார பந்தமே இல்லாதவர்)
836. निरीश्वरः — (தனக்கு) தலைவன் இல்லாதவர்
837. निष्ठा — (தன்னை) உருவாக்கியவன் அற்றவர்
838. निष्पृतिः — எதையும் சேர்த்துக்கொள்ளாதவர்
839. निःश्वः — தனது என்று ஒன்றுமில்லாதவர்

840. निष्कः — தங்கக்காசு (போன்றவர்)
841. निपिलवामदुः — அனைத்தும் வசிக்கும் இருப்பிடமானவர்
842. प्रीमः — (தேஹமாகிய) கோட்டையில் உறைபவர்
843. पुत्रगः — (அனைவருக்கும்) முன் செல்பவர்
844. पुष्टः — புண்யமானவர்
845. पुत्राभी — முன்னோர்களை வணங்குபவர்
846. पुरपिचः — பலருக்கும் பிரியமானவர்
847. विप्राउवीरः — கொண்டாடப்படும் வீரம் மிக்கவர்
848. विष्टमः — வித்யைகளுக்கெல்லாம் அதிபதி
849. मीविष्टधेरमीगुरुः — ஸ்ரீவித்யையின் ஷோடஸி மந்திரத்துக்கு குரு
850. लक्ष्मीः — (அனைவராலும்) அடையாளம் காணப்பெறுபவர்
851. लक्षुः — (வேத வாக்யங்களால் நேரடியாக தெரிவிக்கவியலாமல்) மறைமுகமாக தெரிவிக்கப்படுபவர்
852. लक्ष्मः — (ஸூபமான) அங்க லக்ஷணங்களை உடையவர்
853. लक्ष्मणः — லக்ஷணங்களை அறிந்தவர்
854. लमद्भुतः — ஒளிரும் ஸ்தானம் கொண்டவர்
855. सीभाना — அடக்கமானவர்
856. रंभगतिः — அன்னம் போன்ற (அழகுற) நகருபவர்
857. रंभः — அன்னம் (போல் நித்யாநித்யங்களை பிரிக்கத்தெரிந்தவர்)
858. रंभश्चेतुर्दभुलः — அன்னம் போன்ற வெண்ணிற இதயத்தாமரை கொண்டவர்
859. रंभभर्तृदुद्धुलः — ஹம்ஸ என்னும் மந்திரத்தின் தத்துவ பொருளை அறிந்தவர்
860. रंभवतः — ஸுர்யன் போன்ற நிறத்தினர்

861. रुग्णः — ஹரிக்கு பிரியமானவர்
862. रुद्धमरुः — மகிழ்ச்சியும் கோபத்தையும் சகித்துக்கொள்பவர்
863. रुभुमलः — (உள்ளிருக்கும் ஆனந்தத்தால்) சிரித்துக்கொண்டு சுகமாய் இருப்பவர்
864. रुविस्त्रिः — மிகுவது குறைவது (இரண்டையும்) தள்ளிய (பரம்பொருளானவர்)
865. मृः — ஸபையில் முன்னிற்பவர்
866. मरुपतिः — ஸபைக்கு தலைவர்
867. भूमी — (அனைத்திற்கும்) உரிமையாளர்
868. मृतिः — (சேவை செய்பவர்களுக்கு அனுக்ரஹமாகிய) நல்ல ஊதியம் அளிப்பவர்
869. मरुपः — (மீண்டும் மீண்டும்) பிறப்பதன் (அவசியத்தை) தவிர்ப்பவர்
870. रीवेरमीउलभृः — விளாமிச்சை வேர் போல் குளிர்ச்சியாகவும் (வாசனையாகவும் உள்ள) மனதைக் கொண்டவர்
871. रीमरीरुगिउङ्गुका — லஜ்ஜையுடவளாகிய (அம்பாளால் ஆனால் தைரியமாக) அபஹரிக்கப்பட்ட (பாதி) உடலைக் கொண்டவர்
872. लरिउमेधमृः — அனைத்து மந்த்ரங்களின் லக்ஷ்ய அர்த்தங்களையும் (அறிந்தவர்)
873. लरुकेरुगुयकः — லக்ஷம் கோடி ப்ரம்மாண்டங்களுக்கு நாயகன்
874. ललिउङ्गः — லளிதமான உடலைக் கொண்டவர்
875. लयलु — (பிரம்மத்துடன்) லயத்தை அறிந்தவர்
876. लरुधुः — தன்னை அடைந்தவர்
877. लरुदुः — கிடைத்த (தன் சொருபமான ஆனந்தத்தில்) களித்திருப்பவர்
878. कभुकः — சங்கு போன்ற கழுத்துடையவர்
879. कलिधुमी — கலியை துவம்சம் செய்பவர்

880. कलृप्त — மங்களங்களில் உள்ளுறைபவர்
881. कलप्रति: — அழகிய குரலுடையவர்
882. रुधिरचर्माङ्गः — பண்டிதர்களின் கூட்டத்தை அலங்கரிப்பவர்
883. रुगः — பூமியில் அவதரித்தவர்
884. रुमरमेविउः — பூமியில் வாழும் தேவர்களால் (அந்தணர்களால்) வணங்கப்பட்டவர்
885. रागविउ — யாகங்களை அறிந்தவர்
886. वैगविउ — யோகத்தை அறிந்தவர்
887. यक्षः — காரியங்களில் தானே ஈடுபட்டவர்
888. यमैः — புகழை அளிப்பவர்
889. यमपुत्रः — சுய கட்டுப்பாட்டை விரும்புபவர்
890. उद्धवृरुडिवृगः — ஓங்காரம் வியாஹ்ருதிகள் இவற்றில் இருந்து எண்ணங்களை நீக்காதவர்
891. उभिउरडिभङ्गलः — எதிரிக்கூட்டத்தை (வாதில் வென்று) வணங்கச்செய்தவர்
892. रागमैलमिरञ्जरी — நாக பர்வதத்தின் உச்சியில் ஸஞ்சரித்தவர்
893. राभगिउम्भाम्यः — ராமகிரி ஆம்ரமத்தை ஆம்ரயித்தவர்
894. राडिउरुपुः — வேண்டிய செல்வத்தைத் தருபவர்
895. मवः — (உலகை தன்னுள் லயமாகும்படி) ஸம்ஹரிப்பவர்
896. मर्पिनः — ஏக்கமற்றவர்
897. भेउभेपुः — மகிழ்ச்சியில் களித்தவர்
898. यडिउरुविबैकङ्गः — யதிகளின் நடத்தையை ஆராய்ந்து அறிந்தவர்
899. यउपीः — (விசாரங்களில்) புத்தியைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
900. यउरुवनः — (வ்யவஹாரங்களில் மனோ)பாவத்தைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
901. उङ्करी — ஓங்காரத்தையே (எப்பொழுதும் த்யானத்தில்) கொண்டவர்

902. विउउङ्गैउमूडिउः — अत्வைதத்தைக் (காட்டும்) வேத (வாக்யங்களையும்) ந்யாயங்களையும் விவரித்தவர்
903. कृपाविणिः — கருணைக்களஞ்சியம்
904. यश — நிர்வஹிப்பவர்
905. यउभनः — மனதைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
906. यभृः — (பக்திக்கு) கட்டுப்படுபவர்
907. यल्लङ्गः — யஜ்ஞங்களை உறுப்புகளாகக் கொண்டவர்
908. यल्लुधम् — யஜ்ஞத்துக்கு ஆபரணம் போன்றவர்
909. यल्लः — யஜ்ஞ (ஸ்வரூபி)
910. यल्लपडिः — யஜ்ஞங்களுக்குத் தலைவர்
911. यश्व — யஜமான (ஸ்வரூபியானவர்)
912. यल्लुः — யஜ்ஞங்களின் ஆதாரம்
913. यल्लुवः — யஜ்ஞங்களை நடத்துவிப்பவர்
914. कृपादिउकरालभुः — கருணை கைகொடுத்து தூக்கிவிடுபவர்
915. विश्वुविणिः — விதியை மாற்றவல்லவர்
916. यश्वभुः — ப்ரஹ்மாண்டத்தை உருவாக்கவல்லவர்
917. निपिलक्कुउलामादः — பூமி முழுதுக்கும் ஆசார்யனானவர்
918. पाधल्लभउपल्लः — போலி தத்துவங்களை உடைய மதங்களை கண்டித்தவர்
919. पडिष्ठापकभुत्तुः — உயர்ந்தவற்றை (தத்துவங்களை) நிலை பெறச்செய்தவர்
920. भउश्वयभल्लनयः — அத்வைதம் என்ற பெரும்பாதையை (வேதத்தின் கருத்தாக) தீர்மானித்தவர்
921. परिश्रल्लकपुवैल्ल — துறவிகளுள் முன்னிற்பவர்
922. यनउपुः — அளவற்ற (உலகை) முன்நடத்துபவர்
923. यउराउरः — உள்ளுக்குள் உள்ளே (இருப்பவர்)

924. भृङ्गः — (ஸம்ஸாரத் தளைகளிலிருந்து) விடுபட்டவர்
925. भृङ्गः — கொண்டாடப்படும் புனிதர்
926. भृङ्गः — சார்பில்லாமல் (தீர்ப்பு அளிப்பவர்)
927. भृङ्गः — செருக்கிலிருந்து தூர (விலகியவர்)
928. भृङ्गः — (பக்தர்கள்) மனத்தில் (உள்ள த்யான) வடிவானவர்
929. भृङ्गः — (உலகமே) அடங்கிய (நிலையிலுள்ளவர்)
930. भृङ्गः — மங்களம் செய்பவர்
931. भृङ्गः — தூயவர்
932. भृङ्गः — (தர்மத்தைக் காப்பாற்றுவதில்) சூரர்
933. भृङ्गः — சோகம் சிறிதும் அற்றவர்
934. भृङ्गः — துறவி வடிவினர்
935. भृङ्गः — (ஞானத்திற்கான) பாதையை செதுக்கியவர்
936. भृङ्गः — பொறுமைசாலி
937. भृङ्गः — (வாதங்களில்) காயமடையாதவர்
938. भृङ्गः — அக்ஷதைகளுடன் கூடி அர்ச்சனை செய்பவர்/செய்யப்படுபவர்
939. भृङ्गः — அரசர்களுக்கெல்லாம் அரசர்களால் பூஜிக்கப்பட்டவர்
940. भृङ्गः — ரஸிக்கவைக்கக்கூடியவர்
941. भृङ्गः — ரஸிக்கவைப்பவர்
942. भृङ्गः — ஒளி வீசுபவர்
943. भृङ्गः — மகிழ்பவர்
944. भृङ्गः — மகிழ்விப்பவர்
945. भृङ्गः — ரஸவாதம் தெரிந்தவர்
946. भृङ्गः — வெள்ளி(ப்பனி) மலையில் வசிப்பவர்

947. शङ्खः — தூலமாக இல்லாதவர்
948. शङ्खः — அணுவாக இல்லாதவர்
949. रुध्रः — (கட்டைவிரல் அளவு) குட்டையான (ஜீவ சொருபமானவர்)
950. भृशः — மந்திர வடிவினர்
951. भृशः — ஞாபக ஸக்தி வடிவினர்
952. भृशः — விசாலமான மனம் உடையவர்
953. शङ्खः — வெகு தூரம் நடந்து பயணித்தவர் / (விஸ்வரூபத்தில்) பல கால்கள் உடையவர்
954. शङ्खः — (விஸ்வரூபத்தில்) பல தோள்கள் உள்ளவர்
955. शङ्खः — (விஸ்வரூபத்தில்) பல தலைகள் உள்ளவர்
956. शङ्खः — பலர் அன்புக்கும் உரியவர்
957. शङ्खः — (ஸ்வப்னத்தைப் போல்) உள்பொருளைப் பார்க்காதவர்
958. शङ्खः — (அனைத்துப் பொருள்களையும் ஒருசேர) பார்க்காதவர்
959. शङ्खः — (விழிப்பைப் போல்) வெளிப்பொருளைப் பார்க்காதவர்
960. शङ्खः — சைதன்யமற்று இல்லாதவர்
961. शङ्खः — திரண்ட அறிவு வடிவினர் (அறிவு தவிர வேறெதுவுமில்லாதவர்)
962. शङ्खः — ஸரீரத்திற்குள் இருந்து விஷயங்களை அறியும் விஞ்ஞான வடிவினர்
963. शङ्खः — (அத்தகைய விஞ்ஞானங்களிலேயே) ஒளிர்பவர்
964. शङ्खः — பிடித்தது பிடிக்காதது என்னும் உணர்வுகளால் பாதிக்கப்படாதவர்
965. शङ्खः — அழிவில்லாதவர்
966. शङ्खः — ஆகாசத்தையே உடலாகக் (கொண்டு உள்ளுறைபவர்)
967. शङ्खः — நிலம் அல்லாதவர்

968. मल्लः — நீர் அல்லாதவர்
969. मग्निः — நெருப்பு அல்லாதவர்
970. मन्थः — வளி (காற்று) அல்லாதவர்
971. मन्थरः — வெளி (ஆகாயம்) அல்லாதவர்
972. मन्थरः — (கர்ம இந்த்ரியங்களால்) பிடிக்க இயலாதவர்
973. मन्थरः — (ஞான இந்த்ரியங்களால்) காண முடியாதவர்
974. मन्थरः — (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) கேட்காதவர்
975. मन्थरः — (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) கேட்பவர்
976. मन्थरः — (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) செய்பவர்
977. मन्थरः — (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) செய்யாதவர்
978. मन्थरः — (உண்மையில்) மணமற்றவர்
979. मन्थरः — சுவையில்லாதவர்
980. मन्थरः — உருவில்லாதவர்
981. मन्थरः — தொட இயலாதவர்
982. मन्थरः — ஒலியற்றவர்
983. मन्थरः — (வேத) ஸப்தங்களை (தன்னைத் தெரிவிப்பவையாகக்) கொண்டவர்
984. मन्थरः — (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) நினைப்பவர்
985. मन्थरः — (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) நினைக்காதவர்
986. मन्थरः — (மனம் விஷயங்களை நினைக்கையில் அதற்குள் இருப்பதால்) அதனை ஒட்டி பார்ப்பவர்
987. मन्थरः — (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) தீர்மானிப்பவர்
988. मन्थरः — (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) தீர்மானிக்காதவர்
989. मन्थरः — (ஆத்மாவை அறிய வேண்டும் என்ற) விழிப்பூட்டுபவர்

990. एकः — (உண்மையில்) ஒன்றாக உள்ளவர்
991. शैकः — (உலக நடப்பில்) பலதாக உள்ளவர்
992. केवलज्ञ — (வெளி தொடர்பற்ற) தனி ஆத்மாவானவர்
993. भवः — எல்லாமும் ஆனவர்
994. भ्रमभोगः — ஸம்ஸாரத்தில் இருந்து விடுவிப்பவர்
995. निमुक्तः — எப்போதும் சுத்தர் ???
996. निश्वसः — எப்போதும் நல்லறிவானவர் ??
997. निभृत् — எப்போதும் முக்தர் ஆனவர் ?
998. निरम्यः — (தனக்கு) புகலிடம் (தேவை) இல்லாதவர்
999. नृविमृगम् — ஹ்ருதயத்தில் உள்ள அவித்யை என்னும் இருளை வெட்டுபவர்
1000. नृद्वन्द्वम् — பக்தர்களின் இதயத் தாமரையில் சூரியனானவர்

